

१२४



रजत-नीराजना

वर्ग संख्या.....

प्राप्ति-संख्या.....

ग्रन्थ-कांड

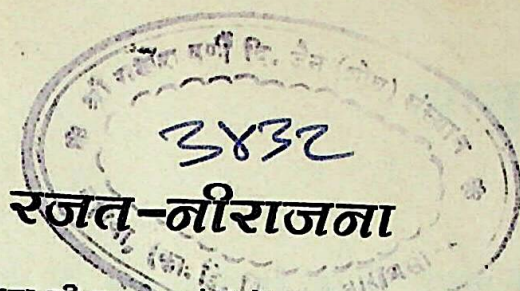
श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम रत्न नीरा जना

लेखक डा० परशुराम शर्मा



[स्वाधीनता की रजत-जयंती के अवसर पर प्रकाशित
ललितपुर के स्वतंत्रता-सेनानियों की स्मारिका]

सम्पादक एवं भूमिका लेखक—

डॉ. परशुराम शुक्ल विरही

प्रस्तुतकर्ता एवं प्रकाशक—

हरिहरनारायण चौबे

अध्यक्ष

नगरपालिका, ललितपुर (उ० प्र०)

श्रीगुरुभ्यो नमः

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

— श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

— श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

(१०२ ०३) श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

आमुख

हम स्वतंत्रता की रजत-जयंती-पर्व को बड़े उल्लास के साथ मना रहे हैं। देश की स्वाधीनता की लड़ाई में जिन साहसी, त्यागी और बलिदानी देश-भक्तों ने अपना योग-दान किया है, उनकी स्मृति इस अवसर पर अवश्य आती है। एक बहुत बड़ी शक्ति से, एक बहुत बड़े साम्राज्य से और एक बहुत बड़े सुसंगित शासन-तंत्र से हमारे देश के स्वाधीनता सेनानियों ने मोर्चा लिया था। स्वतंत्रता की रजत-जयंती के अवसर पर अनेक कार्यक्रम बने और उनके द्वारा हमने अपने उल्लास को प्रदर्शित किया। मैंने इस अवसर पर यह सोचा कि ललितपुर नगर और ललितपुर क्षेत्र के जिन तपस्वी स्वाधीनता-सेनानियों ने समय समय पर स्वाधीनता आन्दोलनों में भाग लिया, उन्हें आमंत्रित किया जाय और उनका उचित सम्मान किया जाय। नगर पालिका ललितपुर के सदस्यों ने मेरी बात को समर्थन दिया और परिणाम स्वरूप यह सम्मान-समारोह तथा उसकी स्मारिका आपके समक्ष है।

इस कार्य के सम्पन्न होने में मुझे श्री ब्रजनन्दन शर्मा, श्री शम्भूदयाल सज़ा, श्री उत्तमचन्द कठरया, श्री विहारीलाल बबेले, श्री भगवतनारायण शर्मा, श्री रामबाबू पाठक तथा श्री हरिश्चन्द्र जैन का सक्रिय सहयोग मिला है। तदर्थ मैं सबके प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ। अपनी व्यस्तता के बावजूद डॉ. परशुराम शुक्ल विरही ने इसके सम्पादन का कष्ट उठाया। उनको मैं सादर धन्यवाद समर्पित करता हूँ।

—हरिहरनारायण चौबे

भूमिका

भारत के प्रथम स्वधीनता-संग्राम में जिन हथियों ने हथियार चलाये थे, उनमें कुछ हाथ ललितपुर-क्षेत्र के भी थे, जिन वीरों ने देश की वलि-वेदी पर अपने प्राणों की आहुति दी थी, उनमें कुछ नेता ललितपुर के भी थे और विद्रोह की असफलता के पश्चात के दमन-चक्र में जो देश-भक्त प्रताड़ित हुये थे, उनमें कुछ लोग यहाँ के भी थे। सन् सत्तावन की क्रान्ति का अंगारा एक दम बुझा नहीं था। समय विधाता ने उसकी राख की परतें जब हटायीं, तो वह नये युग में, नये रूप में दहक उठा। इस नयी आग को ललितपुर-क्षेत्र ने भी अनुभव किया और देश की स्वाधीनता के महायज्ञ में उसने भी अपने आपको हविष्य बनाने में आनाकानी नहीं की।

भारत की स्वधीनता का प्रश्न जब देश के उच्चवर्गीय नेताओं की कागजी कार्यवाहियों से ऊब कर गांधी जी के माध्यम से जनता के निकट पहुँचा, तो जनता ने उसको बड़ी लगन और उत्साह से लिया। देश के मानव-महासिन्धु में जैसे ज्वार आ गया। प्रथम असहयोग आन्दोलन में जब देश-भक्त वकील अदालतें छोड़ रहे थे, देश-प्रेमी सरकारी कर्मचारी अपनी नौकरियाँ छोड़ रहे थे, विद्यार्थी स्कूल-कॉलेज का बहिष्कार कर रहे थे, सरकारी अलंकरणों और अवैतनिक पदों को लोग त्याग रहे थे, विदेशी माल की होली जला रहे थे, उस समय ललितपुर ने भी अपने राजनैतिक कर्तव्य का निर्वाह किया और अपनी राष्ट्रीय चेतना को प्रमाणित किया। श्री गुलई तिवारी और श्री हरचन्दी तेलो १९२१ के आन्दोलन में ललितपुर से और श्री चिन्तामन महरोनी से राष्ट्रध्वज लेकर निकल पड़े और बन्दी बना लिये गये।

देश की राजनीति के आकाश में सुधारों के आश्वासनों और समझौतों के जो रंगीन रीते बादल दिखाई दिये थे वे शनः शनः तिरोहित होने लगे। माँगों, आन्दोलनों और संघर्षों के बादल छाने लगे थे। कभी इन बादलों में किसी आवेशमयी घटना की गर्जना होती तो कभी किसी 'एक्शन' की बिजली कौंध जाती थी। समय

का अख्ब तौ-दस वार्षिक छलांगें लगा पाया था कि देश के नेताओं ने यह निश्चय किया कि २६ जनवरी १९३० को समस्त देश में पूर्ण स्वराज्य-दिवस मनाया जाय। गांधी जी ने वायसराय लाई अविन के सामने ११ मांगे प्रस्तुत की थीं।

- १- सम्पूर्ण मदिरा-निषेध
- २- विनिमय-दर घटाई जाय और १ शि. ४ पेंस कर दी जाय।
- ३- जमीन का लगान आधा कर दिया जाय।
- ४- नमक-कर उठा दिया जाय।
- ५- सैनिक व्यय में ५ % कमी की जाय।
- ६- बड़ी बड़ी नौकरियों के वेतन अच्छे कर दिये जायें।
- ७- विदेशी कपड़े के आयात पर निषेध-कर लगा दिया जाय।
- ८- भारतीय समुद्र तट केवल भारतीय जहाजों के लिये सुरक्षित रखने का प्रस्तावित कानून पास कर दिया जाय।
- ९- हत्या या हत्या के प्रयत्न में साधारण ट्रिव्यूनलों द्वारा सजा पाये हुये लोगों के सिवा समस्त राजनैतिक कैदी छोड़ दिये जायें। १२४ अ धारा और १८८१ का तीसरा रेगुलेशन उठा दिया जाय और सारे निर्वासित भारतीयों को वापस आ जाने दिया जाय।
- १०- खुफिया पुलिस उठा दी जाय अथवा उस पर जनता का नियंत्रण कर दिया जाय।
- ११- आत्म-रक्षा हथियार रखने के परवाने दिये जायें और उन पर जनता का नियंत्रण रहे।

इन मांगों को सुनकर वायसराय ने पीठ फेर दी। परिणामतः नमक-कर के विरोध को लेकर सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। देश में जन-आन्दोलन की एक व्यापक लहर आयी। देश की स्वा-धीनता के लिये संघर्ष करने वालों ने सरकारी जेलों की स्थान-क्षमता को चुनौती दी। हथकड़ियां कम पड़ने लगीं और जेलों का स्थान जैसे चुकने लगा। इस आन्दोलन में ललितपुर से श्री नन्दकिशोर किलेदार, श्री दौलतराम, श्री ब्रजनन्दन किलेदार, श्री रामदास दुबे श्री ब्रजनन्दन शर्मा और श्री प्यारेलाल यादव, तालवैहट से श्री

रामजीलाल भार्गव, श्री कन्हैयालाल, श्री गोविन्ददास, श्री गोविन्ददास व्यास, श्री मिलू कड़ेरे और विश्वेश्वरसिंह ठाकुर, जखीरा से श्री चन्दनसिंह और वार से श्री भैरोंप्रसाद सविनय अवज्ञा प्रदर्शित करके बन्दी बनाये गये थे । इस प्रकार ललितपुर परिक्षेत्र का लोक-मानस अपनी राष्ट्रीय भावनाओं की अन्विति अपने आचरण में कर रहा था । दो वर्ष पश्चात् ही श्री नन्दकिशोर जी किलेदार, श्री ब्रजनन्दन किलेदार, श्री वृन्दावन इमलया, श्री प्यारेलाल यादव, श्री डालचन्द जैन, श्री मूलचन्द और श्री दल्लू उर्फ खुमान ने ललितपुर से तथा श्री श्यामलाल गुप्ता ने वांसी से जेल-यात्रा की ।

देश में गांधी जी के नेतृत्व में जा सत्याग्रह-आन्दोलन या अहिंसक क्रान्ति-चेष्टायें हो रही थीं, उन्हीं के साथ-साथ देश की तरुणार्ई का उष्ण रक्त हिंसक क्रान्ति की गतिविधियों में संलग्न था । यह तो मानना हो चाहिये कि देश की स्वधीनता में क्रान्तिकारी संगठनों का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा । ललितपुर में स्वतन्त्र भारत के प्रथम गण-तन्त्र दिवस की स्मृति में बनाये गये घंटाघर के मध्यतलीय दीर्घाद्वारों में से एक में गांधी जी की प्रतिमा स्थापित की गई है, तो दूसरे में अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की प्रतिमा है । यह सम्भवतः इसी बात का प्रतीक है कि अहिंसक आन्दोलन और सशस्त्र-क्रान्ति के सम्मिलित प्रभाव से ही देश को स्वतन्त्रता मिल सकी है । ललितपुर नगर को यह ऐतिहासिक गौरव प्राप्त है कि इस नगर के वयोवृद्ध नेता श्री नन्दकिशोर जी किलेदार के घर में चन्द्रशेखर आजाद और और शम्भूनाथ आजाद जैसे क्रान्तिकारी रह चुके हैं ।

हथकड़ियों-वेड़ियों की झनझनाहट, फांसी के फन्दों, बम-काण्डों आन्दोलनों, दमन-कृत्यों, आश्वासनों और समझौतों को लिये हुये किसी प्रकार एक दशक अपने पांव आगे बढ़ा पाया था कि सन् १९४२ में 'भारत छोड़ो' का सशक्त नारा लगा । सारा भारत देश आन्दोलन के लिये सन्नद्ध हो गया । ललितपुर में श्री ब्रजनन्दन शर्मा ने एक राष्ट्रीय पुस्तकालय और खादी-भण्डार खोलकर स्थानीय तरुणों को आन्दोलन की ओर आकृष्ट किया और बड़े जोश के साथ

प्रभात-फेरियां तथा जुलूस निकाले जाने लगे । अगस्त के दिन थे । आकाश में घन-घटायें घिरती थीं, तो ललितपुर की गलियों में युवक-यूथ एक जुट होकर जुलूस में चल पड़ते थे, आकाश में घन-गर्जन होता था तो ललितपुर के आजादी के दीवानों का जुलूस इन्कलाव-जिन्दाबाद, भारत माता की जय, महात्मा गांधी की जय, "अंग्रेजो भारत छोड़ो" आदि नारों के समवेत स्वर से वातावरण को प्रकम्पित कर देता था । आकाश में इन्द्र धनुष शोभा दिखाता था, तो ललितपुर की सड़कों-गलियों में घूमते जुलूस के फहराते हुये राष्ट्र-ध्वज के तीन रंग अपनी अनुपम छटा दिखाते थे ।

सन् १९४२ के जन-आन्दोलन में ललितपुर क्षेत्र का योगदान अवश्य स्मरणीय रहेगा । इस आन्दोलन में, सारे देश में, पुलिस के अत्याचारों से १५००० आन्दोलनकारी मरे थे । इन शहीदों में एक शहीद आस-पास की वस्तियों की माला के सुमेरु ललितपुर नगर का निवासी था । इस आन्दोलन में ललितपुर से सर्व श्री अभिनन्दन कुमार टंडैया, अहमद खां पहलवान, उत्तमचन्द कठरया, रामचन्द, खूबचन्द, बाबूलाल, गनेशप्रसाद, बाबूलाल फूलमाली (शहीद) बाबूलाल निगम, ब्रजनन्दन शर्मा, ब्रजनन्दन किलेदार, वच्चू, घनश्याम नाई, जयनारायण लिटौरिया, जानकीप्रसाद, जानकीप्रसाद पाटकार, टेकचन्द ठाकुरचन्द जैन, ताराचन्द, धन्नालाल, धन्नालाल गुड़ा, भैयालाल यादव, मदनलाल किलेदार, मूलन, मोतीलाल, मोतीलाल टंडैया, रामदास दुवे, रामानाथ, शम्भूदयाल संज्ञा, शिखरचन्द सिंघई, शिवप्रसाद जैन, सुखलाल, हरप्रसाद, हुकुमचन्द बुखारिया 'तन्मय', हुकुमचन्द वड़घरिया, और श्रीमती केशरबाई के हाथों ने हथकड़ियाँ पहनीं । तालबंहेट से सर्व श्री रामरतन गोस्वामी, सुदामाप्रसाद गोस्वामी, मथुरादास लिटौरिया, ब्रजनन्दन पस्तोर, बैजनाथ, जमुनाप्रसाद रामपालसिंह, और मणिराम कंवन, (सन् ४० में) जेल गये । बानपुर से सर्व श्री अयोध्या सेवारे, आनन्दी, गजराजसिंह गुनुआ, गोपालप्रसाद, घसीटे, जैराम, डमरू, दवीसिंह, प्यारेलाल, बल्देवसिंह भगवानदास, भूपत, मंगलसिंह, कालेरिया, मदनसिंह और रघुवीरसिंह बन्दी बनाये गये । महारौनी से सर्व श्री गोपीचन्द जैन, प्यारेलाल, राजाराम, शिवराजसिंह, मंडावरा के सर्व श्री कुंजीलाल, कुन्दनलाल,

गोपी, जाखलौन से सर्व श्री फुन्दा, बाबूलाल, राजघर, हरदास शर्मा, पाली से सर्व श्री गोविन्ददास जैन, गोरेलाल चौरसिया, मन्नुलाल, चौरसिया, और बार से भैरोंप्रसाद को कारागार दण्ड दिया गया ।

ललितपुर नगर झांसी-बम्बई रेलमार्ग पर झांसी से ६४ किलो मीटर की दूरी पर स्थित है । आमोदी प्रकृति से आवेष्टित यह नगर अपने घण्टाघर के प्रतीक से अपने उच्चाशय को प्रमाणित करता है तो गोविन्द सागर के प्रतीक से विशाल-हृदयता और अपने पानीदार स्वभाव को अभिव्यक्ति देता है । जब करोंदी महकती है, पलाश दहकता है, महुआ-वन अपनी मन्द-मन्दिर गंध छोड़ता है, हर सिंगार और मल्लिका झरती है, तो यहां का निवासी अपनी आर्थिक विपन्नता को भूलकर तन्मय हो उठता है और कोई लोक-गीत गा उठता है ।

क्षेत्र के स्वाधीनता-सेनानियों के सामूहिक सम्मान समारोह की योजना बनाकर ललितपुर नगर पालिका के अध्यक्ष श्री हरिहरनारायण चौवे ने एक पवित्र राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वाह किया है । जिनके त्याग और बलिदान से हमारा जीवन स्वतंत्र और समुन्नत हुआ है उनका कितना भग्न सम्मान हम करें, तो भी हम उन्नत नहीं हो सकते । लेकिन हम उन्हें भूलेंगे नहीं । इस योजना की एक और महत्ता है । यह कि देश की स्वतंत्रता को रजत-जयंती के अवसर पर यह सम्मान समारोह किया जा रहा है । सम्मान समारोह के प्रतीक के रूप में यह रजत-नीराजना आपके हाथों में है । स्वाधीनता सेनानियों को इस पुनीत अवसर पर मैं प्रणाम करता हूँ ।

—पद्मशुभ्राम शुक्ल



आ

यु

ष

102

103

104

[१०]

१. नाम—श्री नन्दकिशोर जी किलेदार
२. पिता का नाम—श्रीसरजूप्रसाद
३. स्थान—ललितपुर
४. जन्म—बैसाख सुदी १४, १९३४
५. वर्तमान आयु—६५ वर्ष
६. जेल—यात्रा—वर्ष—१९३०—१९३२—
१९४२—नजरबंदी—१ वर्ष
७. अन्य विवरण—



मातृभूमि पर सवम्ब बलिदान करने वाले व्यक्तियों में ललितपुर सब-डिवीजन में श्री नंदकिशोर जी किलेदार सर्वथा अग्रगण्य हैं। सन १८७७ ई० में जन्मे इस त्यागी व कर्मठ पुरुष ने ललितपुर उपक्षेत्र के जन आन्दोलन को दिशा प्रदान की है। हड़तालें व आन्दोलन आदि के कार्यक्रम जो गांधी जी के नेतृत्व में भारत-भूमि में हुये उनको ललितपुर सब-डिवीजन में चलाने का श्रेय किलेदार जी को ही है।

ललितपुर-परिसर के स्वातंत्र्य आन्दोलन में वस्तुतः श्री किलेदार जी का कार्य अमित प्रेरणास्पद एवं तात्कालिक नवयुवकों में राष्ट्रभक्ति उत्पन्न करने वाला रहा है। १९२० ई० में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात होकर यह जनान्दोलन देशभर में परिव्याप्त होगया था इस असहयोग आन्दोलन को १९२० ई० में इस क्षेत्र में व्यापक बनाकर ललितपुर के परिसर के स्वतंत्रता-संग्राम का आह्वान एवं धीगणेश आपने ही किया। आप बंबई से प्रकाशित 'बैकटेस्वर' एवं पूना से प्रकाशित तिलक जी का 'केसरी' उस समय मँगाकर जन-सामान्य को पढ़-पढ़कर सुनाते थे, जिससे युवकों एवं अन्य विभिन्न प्रकार के नागरिकों के भीतर बौद्धिक एवं राजनैतिक चेतना जाग्रत होती थी। दूसरी ओर आप सदैव कांग्रेस के केन्द्रीय-नेतृत्व से जुड़े रहकर स्वातंत्र्य-संघर्ष के पक्ष-धर के रूप में इस उपक्षेत्र की सम्पूर्ण प्रज्ञा के परिवेश एवं परिप्रेक्ष्य को जागरूकता

की अभिनव ऊर्जा प्रदान करते रहते थे ।

इस प्रकार आजादी के हेतु सतत जन-मत निर्माण में जुटे रहते थे, जिसके लिये प्रायः इन्हें क्रान्तिकारी कदम उठाना पड़ते थे । फलतः १९३० ई० के देशव्यापी कांग्रेसी आन्दोलन में भारतीय दंड-संहिता (ताजीरात हिन्द) के सेक्शन १०७ के अन्तर्गत एक वर्ष की सजा पायी । १९३२ ई० में सक्रिय आन्दोलन में भाग लेने के कारण पुनः आपने ६ माह की जेल भोगी । १२६ वीं धारा के अन्तर्गत हो आप पकड़े गये थे । तथा झाँसी की जेल में नजर बंद रहे । आपका संघर्ष बहुमुखी और सत्यानुसंधानी था, इस सदर्भ में यह स्थिति सर्वथा उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी सरकार की आँखों के काँटे चन्द्रशेखर आजाद और शम्भूनाथ व शौकत अली आदि को अवसरानुकूल सहयोग दिया । उन्हें अपने घर पर ठहराया और भरसक सहायता की ।

इसके अतिरिक्त आप श्री श्रीप्रकाश जी के साथ इस संघर्ष के सहभोक्ता रहे । १९४२ ई० में देशव्यापी आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने के कारण आपको एक वर्ष के लिये नजर बंद किया गया ।

१५ अगस्त १९४७ ई. को आपका स्वर्णिम सपना साकार हुआ । अभीष्ट की प्राप्ति के बाद आज आप पंचान्वे वर्ष की अतीव वृद्धावस्था में आध्यात्मिक चिन्तन में शिवनी-(ललितपुर) रह रहे हैं । यह क्षेत्र आप पर गर्व का अनुभव करता है ।



[१२]

१. नाम—श्री ब्रजनन्दन शर्मा
२. पिता का नाम—श्री नारायणदास तिवारी
३. स्थान / पता—ललितपुर
४. जन्म—
५. वर्तमान आयु— ५६ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष १९३० ३ माह १९३१
६ माह, १९३२ में २ बार ६-६
माह ५०) दण्ड, १९४१, ६६ माह
१००) दण्ड १९४२, १ वर्ष १००) दण्ड
७. अन्य विवरण—



ललितपुर के क्षेत्र में राष्ट्रीय कांग्रेस आन्दोलन की अप्रतिम वीरों और साहस-पुत्रों में अनुपम श्री ब्रजनन्दन शर्मा १४ वर्ष की अवस्था में ही राष्ट्र के कर्णधार गांधी जी के आव्हान पर पढ़ाई-लिखाई त्यागकर देश के जन-आन्दोलन में बड़े ही उत्साह पूर्वक सम्मिलित होकर युवकों को नवीन दिशा देने लगे। शीघ्र ही तात्कालिक युवकों के हृदय सम्राट बन गये।

उपर्युक्त तिथियों में दारुण जेल-यात्रायें प्रसन्नता पूर्वक सम्पन्न करते हुये अपने वैयक्तिक एवं पारिवारिक सुख को होमते हुये जुलूस आन्दोलन, हड़ताल और पिकेटिंग में रत रहे तथा ब्रिटिश हुकूमत की जड़ों को खोखला करते हुये, अपनी माँ के दिवंगत हान पर भी गृह से दूर रहते हुये, कंग्रेस पार्टी के दफ्तर में निवास करते हुये, कुछ थोड़ा बहुत मिल जाने पर पेट की आग शांत करते हुये और पानी से पेट भरते हुये आन्दोलन को गतिमय करते रहे। सन् ३० के सत्याग्रह में गिरफ्तार होकर तत्कालीन स्थानीय डिप्टी सुपरिस्टेण्डेन्ट पुलिस श्री लिन्डिनबूम के द्वारा बुरी तरह पिटे, बाल खींचे गये। पिता के सामान की कुर्की हुई। जेल-यात्राओं की ही वरण क्रिया। सन् १९३२ में शराब की दूकानों पर पिकेटिंग करते हुये,

[१३]

दण्ड भोगते हुये श्री सुन्दरलाल जी जैसे नेताओं के सत्संग को जेल में प्राप्त । श्री खैर व श्री धुलेकर के साथ संघर्ष और जेल-यातना के सहभागी शर्मा जी सन् ४२ के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में एक वर्ष की सख्त कैद क फैसले पर अपार प्रसन्न हुये । खदर भंडार और पुस्तकालय को खोलकर आपने राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार किया ।

वह नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं ललितपुर नगरपालिका के भा सफल अध्यक्ष रहे हैं और बाद में एल. आई. सी (जावन वामा निगम) के डिवलपमेंट आफिसर बने । कर्मठ रहते हुये आज उसी पद पर हैं । सामाजिक कार्यों में अब भी खूब रुचि रखते हैं और आज भी नवयुवकों नूतन दिशा दिखलाते हुये उत्साहित करने हैं । ललितपुर उपक्षेत्र आपका वस्तुतः वेहद ऋणी है । शान्त और स्नेहिल स्वभाव से आप आज भी समाज में नई स्फूर्ति भरते रहते हैं ।



१. नाम—श्री ब्रजनन्दन जी किलेदार
२. पिता का नाम—श्री पं० नदकिशोर जी किलेदार
३. स्थान/पता—ल लतपुर
४. जन्म—१-१-१९०२
५. वर्तमान आयु- ७० वर्ष
६. जेल- यात्रा- वर्ष- १९३०, १९३२
१९४२ नजरबंदी १ वर्ष २ माह
७. अन्य विवरण—



श्री ब्रजनन्दन जी किलेदार के लिये राष्ट्रीय आन्दोलन को अपनी आन्तरिकता से वरज किया क्यों कि उन्हें यह परिवेश विरासत में

अपने पूज्य पिताजी श्री नन्दकिशोर जी किलेदार से प्राप्त हुई। परन्तु आन्दोलन का उनकी निजता का तेवर कुछ बहुत प्रखर और सैद्धा-
न्तिक ही था।

सन् १९३० में सेक्शन १०७ के अन्तर्गत १ वर्ष की सजा मिली। परन्तु इससे उनकी क्रान्ति के स्वरूप का परिप्रेक्ष्य और भी घनीभूत रूप में मुखरित हुआ है।

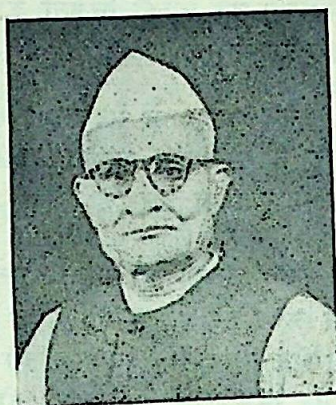
जब उनका रूप ब्रिटिश सत्ता के पांव उखाड़ने में अधिकतम सबल होने लगा तो १९३२ ई० में ६ माह की कैद दे दी गयी। परन्तु वह तो लौह पुरुष हैं। स्वर्ण तपकर जिस प्रकार और अधिक चमक लाता है वह निखरे उठे एवं राष्ट्र को दासता की जजीरों से मुक्त कराने के हेतु तन-मन-धन से आन्दोलनों, हड़तालों और जुलूसों में जुट गये। जब देश व्यापी भारत-छोड़ो आन्दोलन गांधी जी के नेतृत्व में उग्रतम किन्तु अहिंसात्मक रूप में अभिव्यक्त हुआ तो ललितपुर के परिसर में इन्होंने मौलिक सूझबूझ के साथ पूर्ण सहयोग दिया; फलतः १ साल के लिये नजर बन्द हुये। देश आजाद हुआ। आप देश में कांग्रेस के नेतृत्व में काम करते रहे।

स्वतंत्र भारत में आप ललितपुर नगर पालिका के अध्यक्ष रहे। नगर कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और मण्डल कांग्रेस के प्रतिष्ठित नेता रहे।

सम्प्रति कांग्रेस (पुरानी) में इस उपक्षेत्र की सेवा कर रहे हैं।

[१५]

१. नाम-श्री मथुराप्रसाद जी बैद्य
२. पिता का नाम-स्व. श्री दौलतराम जी
३. स्थान/पता-ललितपुर
४. जन्म-महरौनी १९५१ संवत्
५. वर्तमान आयु-७८ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष- १९३०, १९४२ में
७. अन्य विवरण



ललितपुर क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में एक श्रेष्ठ हस्ताक्षर, बेंकटेश्वर प्रेस, बंबई में रहते महात्मा गांधी जी के सम्पर्क में अपनी रात्रिकालीन अवैतनिक पाठशाला के शिक्षण के माध्यम से आने वाले सौभाग्य शाली पौरुषवान पुरुष श्री मथुराप्रसाद जी को राष्ट्रीय आन्दोलन का गंभीर अनुभव प्राप्त है। बेंकटेश्वर समाचार का सम्पादन करते हुये, हिन्दी का वज्र में प्रचार करते हुये राष्ट्रपिता के आन्धान पर, लोकमान्य तिलक ऐनीबीसेंट, लाजपत राय जैस महान नेताओं का सत्संग करते हुये, १९३० के सत्याग्रह की ओर उन्मुख हुये। नन्दकिशोर जा फ़िलेदार के प्रभाव में राष्ट्रीय जन आन्दोलन में पूर्णरूपेण अवतरित हुये। सन् ३० में ही शराब बंदी के लिये निकेटिंग करते हुये गिरफ़्तार हुये। ललितपुर व उरई जेलों में निवसित होते हुये, जेल में राष्ट्रीय झंडा, स्वतंत्रता दिवस पर निकालने पर खड़ी हथकड़ी की कठोरतम सजा को भोगने के भागीदार हुये।

एक से एक परिवारिक भीषण कठिनाइयों से न डिगने वाले श्री मथुराप्रसाद जी सन् ४२ के आन्दोलन में और अधिक सक्रिय हो उठे कांग्रेस कमेटी ललितपुर के अध्यक्ष रहते हुये झासी जेल में १० माह नजरबंद रहे। १५ अगस्त स्वतंत्रता दिवस १९४७ में आप मंडल कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर थे। आप ललितपुर नगरपालिका के लगभग १४ वर्ष तक सदस्य रहे।

[१६]

आजकल आप वृन्दावस्था में भी राष्ट्र की गतिविधियों में भी रुचि रखते हैं। आपका जीवन आज भी गंगा की भांति पावन और जीवन्त है।

१. नाम-श्री वृन्दावन इमलिया
२. पिता का नाम-श्री परमानंद जैन
३. स्थान / पता-ललितपुर
४. जन्म-१९१२ ई०
५. वर्तमान आयु-६० वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष-१९३०, १ वर्ष,
१९३२ दिल्ली ६ सप्ताह, १९३२
जिला भांसी ६ माह
७. अन्य शिवरण—



जिस प्रथम पंक्ति के रणबाँकुरों ने आजादी के संघर्ष में सब कुछ होम दिया था, उनमें श्री वृन्दावन इमलिया का नाम विशेष श्रद्धा और सहानुभूति के साथ जोड़ा जा सकता है। इमलिया जी वस्तुतः आजादी के आन्दोलन रूपी संगम की 'सरस्वती' सरिता की भाँति हैं, जिनका यह क्षेत्र सदैव ऋणी रहेगा। १९३० में नमक कानून तोड़ने के ऊपर सत्याग्रह में शामिल हो उपक्षेत्र ही नहीं देहली जैसे केन्द्रीय स्थल में भी सतत संघर्ष में रत रहे। जुलूस और हड़तालों से अपना जीवन-चरित रचने के कारण देहली, उन्नाव व ललितपुर आदि की जेलों में रहना पड़ा। कांग्रेस के एक वीर सिपाही श्री इमलिया बयालीस के आन्दोलन के सहयोगी रहे हैं। घोर आर्थिक कष्टों में भी आपकी निष्ठा डिगी नहीं। आज आप अर्थाभाव में सादगी और अध्यात्म का जीवन बिताते हैं। आप जिला और मण्डल कांग्रेस के सदस्य और मन्त्री भी रहे हैं।

[१७]

१. नाम-श्री बाबूलाल निगम
२. पिता का नाम-श्री चुन्नीलाल कायस्थ
३. स्थान / पता-ललितपुर
४. जन्म ६-८-१९०१ ई०
५. वर्तमान आयु-७२ वर्ष
६. जेल यात्रा-वर्ष- १९३० में १ वर्ष
५००) दण्ड, १९३१ में ६ माह
१०००) १ वर्ष सजा काटी, १९४० में
६ माह ।



७. अन्य विवरण—

बहुतर वष की अवस्था प्राप्त करके भी कर्मठ रहते हुये आज भी श्री निगम जी को ललितपुर नगर पालिका के परिसर में कार्यरत देखा जा सकता है । थोड़े से ही अर्थार्जन से परितुष्ट रहते हुये खादी वेशधारी निगम जी का पुरातन इतिहास, जो उन्होंने स्वातंत्र्य-आन्दोलन में व्यतीत किया, बड़ा ही प्रेरणा का स्रोत है । इस सेनानी व्यक्तित्व को न अपने नहती कार्यों को दिखाने का गर्व है और न वर्तमान में अपेक्षाकृत कुछ काफी न मिलने की वेदना । वह तो जीवन का कर्तव्य था । देश भक्ति थी । राष्ट्रपिता गांधी की पुकार थी सो उसने कर्तव्यनिष्ठा से किया । सन ३० में नमक कानून तोड़ने के सत्याग्रह में गिरफ्तार होकर एक वर्ष की जेल काटी, फिर सन ३१ में लगानबंदी आन्दोलन में कछवाहों का नेतृत्व किया तथा गिरफ्तार हुये, ६ माह आगरा जेल में रहे । क्रान्तिकारी नवीन दृष्टि थी सो चन्द्रशेखर आजाद व शम्भूनाथ जैसे क्रान्तिकारियों को खूब सहयोग दिया और ललितपुर डाक बगले में अंग्रेज साजेंट की तिरंगे झन्डे को अपमानित करने के कारण खूब पिटाई की और फिर कठोर यातनायें खूब भोगीं । जनता में आज आपका विशेष सम्मान है ।

[१८]

१. नाम- डा. श्री हरीराम चौबे
२. पिता का नाम- श्री पं. घनश्यामदास
३. स्थान / पता-ललितपुर
४. जन्म- श्रावण वदी १३, १९६६ वि.
५. वर्तमान आयु- ६३ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष- १९३३, १९३६.
१९४०, १९४१
७. अन्य विवरण —



डा० हरीराम चौबे का जन्म ललितपुर में हुआ था परन्तु युवावस्था से ही आपका कार्य क्षेत्र मध्यभारत-उज्जैन आदि रहा है। १९३०-३१ से ही कांग्रेस में सम्मिलित होकर उज्जैन को अपनी कार्यस्थली बनाते हुये जनान्दोलनों के कारण आप ६ से अधिक बार जेल गये हैं। आपके ऊपर राजद्रोह का मुकदमा भी चला तथा भारी कठिनाइयां झेलनी पड़ीं। १९४२ के आन्दोलन में आपका योगदान महत्त्वपूर्ण है।

आज वह कई संगठनों के सर्जक अनुभवी पत्रकार एवं कई संस्थाओं के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। वह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे हैं। आपने कई पत्रों का सम्पादन भी किया है।

१. नाम श्री शिवचरणलाल वर्मा
२. पिता का नाम—श्री रामलाल स्वर्णकार
३. स्थान/पता—कांठ (ललितपुर)
४. जन्म— १९११ ई०
५. वर्तमान आयु - ६० वर्ष
६. जेल—यात्रा वर्ष १९३२ में ३ माह व २५) जुमाना
७. अन्य विवरण—



श्री वर्मा जी १५ वर्ष की अवस्था से ही अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ने में दत्तचित्त हुये । नमक सत्याग्रह में भाग लिया । विदेशी माल का बहिष्कार किया । शराब की दुकानों पर निकेटिंग में सम्मिलित हुये । आखिरी जुलूस और सघर्ष के संदर्भ में दो बार कुर्की हुई । आप क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आये और प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री विजय कृष्ण शर्मा को सहयोग देते रहे । आज भी देशभक्ति भावना से भरे हुये प्रगति शील विचार धारा के कार्यों में सहयोगी बनते रहते हैं

[२०]

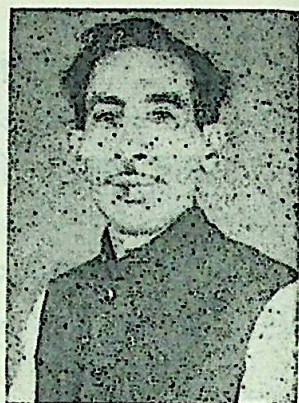
१. नाम- श्री हुकुमचंद बुखारिया 'तन्मय'
२. पिता का नाम- श्री फूलचंद जैन
२. स्थान / पता- ललिनपुर
४. जन्म- २१-१-१९२१ ई०
५. वर्तमान आयु - ५२ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष - १९४२ में १ वर्ष
कठोर कारावास (१००) दण्ड
७. अन्य धिवरण—



कविवर 'तन्मय' बुखारिया जी ने लगभग १६-२० वर्ष की अवस्था से ही राष्ट्रीय संग्राम में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। द्वितीय महायुद्ध के आस-पास ही राष्ट्र व्यापी आन्दोलन में अपनी सम्पूर्ण आन्तरिकता के साथ प्रयत्नशील हुये। सन् १९४०-४१ ई० में उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत ६ माह की सख्त सजा काटी। सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के राष्ट्र व्यापी अप्रतिम परिवेश में श्री तन्मय जा बुखारिया का संवेदन शील अन्तस्विकल होकर क्रान्ति के लिये तड़प उठा और अपनी सम्पूर्ण आन्तरिकता के साथ उस क्रान्ति में स्वयं को होम दिया। फलतः एक वर्ष की कठोर जेल और (१००) रु० जुर्माने की भी सजा काटी। जेल के अन्दर आपकी संवेदना विद्रोह कर बैठी, जिजीविषा के अभिनव आयाम प्रस्फुटित हुये, फलतः 'आहुति' 'पाकिस्तान' और मेरे बापू जैसी कृतियों में आपके ही नहीं राष्ट्र के हृदय की वेदना सम्प्रेषित हुई है। आपकी एक कविता पुस्तक लाल पद्मवर केरल में हिन्दी के पाठ्य-क्रम में निर्धारित है।

सम्प्रति बुखारिया जी वकील हैं।

१. नाम-श्रीमदनलाल किलेदार
२. पिता का नाम-श्रीछोटेलाल किलेदार
३. स्थान पता-ललितपुर
४. जन्म—तिथि प्राप्त नहीं हुई ।
५. वर्तमान आयु-४८ वर्ष के लगभग
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४२, १ वर्ष १००
७. अन्य विवरण



बाल्यकाल से ही सत्याग्रहियों को सहयोग प्रदान करते करते किशोरावस्था में पहुँचते ही जालिम हुकूमत से संघर्ष लेने चल पड़े । उम्र इस योग्य नहीं थी, फिर भी देशप्रेम उम्र पर नहीं भावना पर आधारित होता है । अंग्रेज सरकार का तख्ता उलटने और उसकी शासन प्रणाली में व्यवधान डालने में आपने सक्रिय कदम उठाया । तोड़ फोड़ की कार्यवाही से ही तब आत्मा तृप्त होने वाली थी । संगठित होकर अंग्रेज अफसरों को जमकर पिटाई करने में अपने आपको धन्य समझने वाला यह तरुण १९४२ के आन्दोलन में जब बन्दी बनाया गया तब न्यायाधीश ने उम्र को देखते हुए उन्हें छोड़ने का आदेश दिया । आहुति देने की भावना ने जेल से रिहाई स्वीकार नहीं की । न्यायालय में ही कह दिया कि अगर मुझे छोड़ा जाता है तब मैं वापिस जाकर सरकारी कार्यालयों को आग लगाने का कार्य प्रारम्भ कर दूंगा । मजिस्ट्रेट यह बात सुनकर आग बबूला हो उठा और उसने १ वर्ष की सजा व १०० रु० जुर्माने की आज्ञा दी ।



[२२]

१. नाम-श्री उत्तमचंद कठरया
२. पिता का नाम—श्री मुरलीधर जैन
३. स्थान पता—उत्तमधाना (ललितपुर)
४. जन्म- तिथि प्राप्त नहीं हुई
५. वर्तमान आयु--६० वर्ष के लगभग
६. जेल यात्रा अवधि—अगस्त १९४२
में १ वर्ष तथा १००) अर्ध-दण्ड
७. अन्य विवरण



श्री उत्तमचन्द कठरय को राष्ट्रीय जन-आन्दोलन में कार्यरत होने की प्रेरणा अपने अग्रज की नन्दकिशोर कठरया से मिली। श्री रामेश्वरप्रसाद शर्मा के नेतृत्व में आपने अपने ग्राम उत्तमधाना (ललितपुर-परिसर) में जनजागृति का श्री गणेश किया। चर्खा, स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में योगदान दिया। सन् ४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सम्मिलित होकर तिरंगा झंडा हाथ में लेकर रक्षा-बंधन के अवसर पर सत्याग्रह करते हुये गिरफ्तार होकर वर्ष भर का कठोर कारावास भोगा। आजकल एच. एम. जैन आयुर्वेदिक फार्मेसी का संचालन कर रहे हैं। सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि लेते हैं और अनेक सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध है।

[२३]

१. नाम—श्री शम्भूदयाल संज्ञा
२. पिता का नाम—श्री शिवप्रसाद जी संज्ञा
३. स्थान—ललितपुर
४. जन्म—, १२० ई०
५. वर्तमान आयु—५२ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष—, १९४२, में
१ वर्ष तथा अर्थ दण्ड १००)
७. अन्य विवरण—



ललितपुर उपक्षेत्र में जहां तक राष्ट्रीय-आन्दोलन-परिक्षेत्र में सशक्त पौरुषवान देश-भक्तों का प्रश्न है श्री शम्भूदयाल जी संज्ञा कर्मठ, लगनशील, सीधे, सरल किन्तु ब्रिटिश शासकों के लिये कठोर वज्र थे। राष्ट्रीय आन्दोलन का क्रान्ति परक परिप्रेक्ष्य सन १७३०-३१ से ही ललितपुर क्षेत्र में मुखरित होकर द्वितीय विश्व युद्ध के समीप ही उग्रतम तेवर को लेकर आया था। श्री संज्ञा जी 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में आये, फलतः उन्हें वर्ष भर की कठोर सजा और १०० रुपये जुर्माने के हुये। आज भी आप कांग्रेस और राष्ट्र के प्रति निष्ठावान हैं। स्वतंत्रता सेनानियों के उपकार के लिये सदैव उद्यत रहते हैं।

आप ललितपुर नगर पालिका के सदस्य रह चुके हैं। ललितपुर क्षेत्र के स्वाध्यानीनता-सेनानियों की समिति के मंत्री हैं और अनेक सामाजिक कार्यों में संलग्न हैं।

[२४]

१. नाम—श्री हरपालसिंह
२. पिता का नाम—श्री पिरू ईसाई
३. स्थान / पता—ललितपुर
४. जन्म—२१।१२।१९१६ ई०
५. वर्तमान आयु—५६ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष—८।६।४१,
तथा १९४२ ई०
७. अन्य विवरण—



८-६-४१ को सिपाही की हैसियत से ब्रिटिश आर्मी में भर्ती हुये। कुछ दिन ट्रेनिंग लेने के उपरान्त सिंगापुर चले गए वहां जापान सरकार से लड़ाई लड़ी, किन्तु ब्रिटिश सरकार की हार के कारण बन्दी बना लिए गए। सिंगापुर में ही नेता जी सुभाषचन्द बोस ने आई० एन० ए० संगठित की और समस्त भारतीयों को आवाहन किया। स्वाधीनता की भावना से ओत-प्रोत होकर देश की आजादी के लिये प्राणोत्सर्ग करने को मन मचल उठा और १५-२-४२ को आजाद हिन्द फौज में भर्ती हो गये। हिन्द फील्ड फोर्स ग्रुप में होकर अनेक मोर्चों पर अंग्रेज पलटन से लड़ाई लड़ी, कोहिमा में लड़ाई के दौरान अंग्रेज सार्जेंट ने संगीन से पेट छेद डाला किन्तु यह रण-वांकुरा ३' के घाव होने पर भी शरणागत नहीं हुआ सार्जेंट पुनः बार करता इससे पहिले उसको मौत के घाट उतार दिया। जियावाड़ी में ब्रिटिश आर्मी ने टैंकों के घेरे में लेकर कैद कर लिया। १९४४ के आखिर में पीगू जेल में सख्त यातनाएं दी गई पश्चात रंगून जेल में फिर कलकत्ता के ग नं० ४ में कैदा रहे। इस प्रकार १४ माह तक सख्त यातनाएं भोगने के बाद पण्डित जवाहरलाल नेहरू एवं भूला भाई देसाई की बकालन से यह स्वाधानता का पुजारी अंग्रेजों के जुल्मों से छुटकारा पाकर ८-१-४६ को जेल से बाहर आया। छूटने के उपरान्त दमोह में आजाद हिन्द दल की गरिमा को बनाये रखा। १-१०-४७ को नगर सेना मध्य-

[२५]

प्रदेश में आफ़ीसर के पद पर भर्ती हो गये। कार्य-कुशलता और सैनिक योग्यता के कारण कम्पनी-कमाण्डर के पद को सुशोभित किया। वहीं से रिटायर्ड होकर अपने जन्म-स्थान ललितपुर में विश्राम करने लगे। उत्तरार्द्ध आयु में भी देश की स्वाधीनता की रक्षा-हेतु मोर्चा सम्हालने की भावना संजोए हुए हैं।



१. नाम-श्री मदनलालजी हरिजन
२. पिता का नाम-श्री गम्भीर
३. स्थान/बता- ककरुआ (ललितपुर)
४. जन्म-तिथी ज्ञात नहीं
५. वर्तमान आयु- ६२ वर्ष
६. जेल- यात्रा- सन ४१ में २ माह,
सन ४२ में १ वर्ष कठोर कारावास



श्री मदनलाल जी ककरुआ (ललितपुर) से स्वातन्त्र्य-आन्दोलन के वीर सिपाही रहे हैं। वह अपने क्षेत्र के प्रथम प्रसिद्ध हरिजन आन्दोलनकारी हैं। सन् ४१-४२ के आन्दोलन में आप विशेष सक्रिय हुये फलतः आप दो बार जेल गये। आजकल भी आप सामाजिक कार्यों में लगे रहते हैं।



[२६]

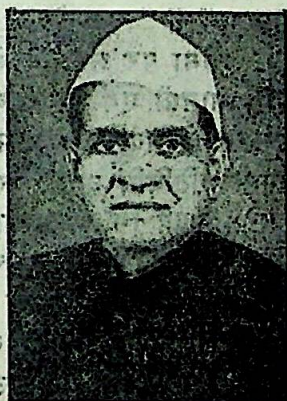
१. नाम—श्री गोविन्ददास जी सिंघई
२. पिता का नाम—श्री पन्नालाल
३. स्थान—लालितपुर
४. जन्म—१५/५/१९१३
५. वर्तमान आयु—५६ वर्ष
६. जैनयात्रा—१९३२ में १ वर्ष
७. अन्य विवरण—



आप गांधीवादी विचार धारा से प्रेरित होने पर सन् १९३२ में एक वर्ष तक जेल में रहे। परतंत्रता काज में आपने स्वतंत्रता सेतानियों को यथाशक्ति सहयोग प्रदान किया। वर्तमान में गांधीवादी विचार धारा को फलता-फूलता देखने की कामना लिए अपने व्योपार में रत हैं।



१. नाम—श्री गोविन्द दास जैन
२. पिता का नाम—श्री फूलचंद
३. स्थान पता—पाली (ललितपुर)
४. जन्म—१९११ ई०
५. वर्तमान आयु—६१ वर्ष
६. जेल-यात्रा—१९४१ में ६ माह
७. आय विवरण—

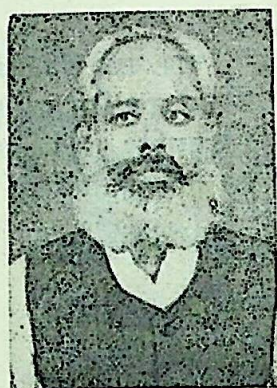


श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर से प्रेरणा पाकर आपने क्रान्ति स्थल पाली के गौरव को बनाए रखा। १९३० में विदेशी वस्त्रों का

वह्मिकार किया। जल-विहार के दिन पाली की गली गली में धूमकर पिकेटिंग की। अंग्रेज सरकार के स्थानीय चाटुकारों के आतंक के प्रति जनता में संघर्ष की ज्वाला फूँकी। १९३६ के जंगल सरयाग्रह में आपके साहस और धैर्य की पाली की जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। सन् १९४१ के व्यक्तिगत आन्दोलन में ६ माह की सजा हुई। वर्तमान में मौन साधक की भांति संगीत के क्षेत्र में और समाज-सेवा में लगे रहते हैं।



१. नाम—हुकुमचंद बड़धरिया
२. पिता का नाम—श्री परमानंद
३. स्थान पता—ललितपुर
- जन्म-भादों सुदी १९७८ वि०
५. वर्तमान आयु—५० वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४२ १ वर्ष तथा
१००) दण्ड
७. अन्य विवरण



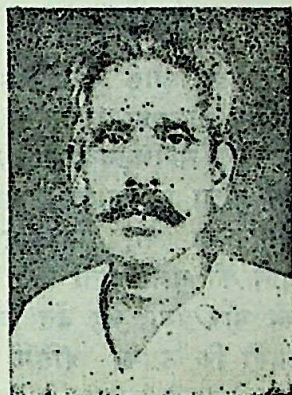
सीमा पर लड़ रहे सैनिकों के लिये यह आवश्यक है कि उनको खाद्य सामग्री एवं आवश्यक वस्तुयें उपलब्ध होती रहें तभी वह अपने साहस को प्रदर्शित कर पाते हैं। स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं को अपनी गतिविधि बनाये रखने के लिये, खाद्यान्न, को एक जगह से दूसरे जगह भिजवाना बहुत दुरूह कार्य होता था, अधिकांश प्रमुख नेता जनता के बीच में भ्रमण नहीं कर पाते थे। क्रांतिकारी गतिविधि होने के कारण एकान्त वास करना पड़ता था। ऐसे समय उनका जनता से सम्पर्क टूट जाता था। जन-सम्पर्क एवं आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि बालंटियर कराते रहते थे, ऐसे बालंटियरों में श्री बड़धरिया ने अनेकों बार जान खतरे में डालकर सेनानियों को सक्रिय सहयोग प्रदान किया। सन ४२

[२८]

में धारा १४४ तोड़कर जेल-यात्रा की। सजा १ वर्ष की हुई साथ में १०० रु० जुर्माना। गांधी जी के आह्वान पर सरकार को आर्थिक दण्ड न देकर २ माह का कठोर कारावास स्वीकार किया।

★

१. नाम श्री-रामचन्द्र जैन
२. पिता का नाम-श्री प्रभूदास
३. स्थान पता-ललितपुर
४. जन्मतिथि याद नहीं
५. वर्तमान आयु ५५ वर्ष
६. जेल-यात्रा-१९४२ १ वर्ष
(१००)
७. अन्य विवरण



क्रांतिकारियों को सहयोग प्रदान करते करते करो या मरो की भावना से वशीभूत होकर १९४२ के आन्दोलन में १ वर्ष का कठोर कारावास तथा १००) जुर्माना अदा न करने पर २ माह की कठोर सजा को स्वीकार करने वाला यह नौजवान इतना देश-प्रेमी और आजादी का दीवाना था कि अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को ध्यान में न रखते हुये रण-क्षेत्र में कूद पड़ा; यह सोचकर कि देश रहेगा तो परिवार रहेगा। परिवार का अस्तित्व आजादी पर आधारित है। देश का अस्तित्व परिवार की आर्थिक स्थिति पर नहीं। वर्तमान में जीवकोपार्जन हेतु सेवा-रत हैं।

★

[२६]

१. नाम— श्री वनश्यामदास नाई
२. पिता का नाम— श्री पल्लूराम
३. स्थान / पता— ललितपुर
४. जन्म-१९२२ ई०
५. वर्तमान आयु-५० वर्ष
६. जेल-यात्रा-१९४२ में १ वर्ष ५ बेंत
७. अन्य विवरण—



डी. आई. आर. ३८ के अन्तर्गत जेलयात्रा करने वाला यह निर्भय नौजवान जनता के बीच ही नहीं कारागार के अन्दर भी अंग्रेज अफसरों से भिड़ गया था। अंग्रेज अफसर के गाली देने पर मुंह पर थूक देने वाला यह आत्म सम्मानी, जो १ वर्ष के कठोर कारावास को भोग रहा था, कब जानता था कि कठोर कारावास से भी बड़कर बेंतों की सजा होती है। आत्म सम्मान को बनाए रखने में ५ बेंतों की मार पड़ी, वह बेंत जिन्हें खाकर आदमी से यह आशा नहीं की जाती कि उसका अंतिम संस्कार न किया जाय ! साहस, धैर्य एवं देश-प्रेम की भावना ने मूर्छा उपरान्त जीवित रखा। बेंतों की मार की अनुभूति भारत सरकार ने की। जिसको आजादी के कार्य कलापों में केवल ५ ही बेंत पड़े, उसे स्वतंत्रता संग्राम का सेनानी मानकर स्वतंत्र भारत में सम्मानित किया गया और आजीविका हेतु सहायता प्रदान की गई।

१. नाम-श्री परमेष्ठीदास जैन
२. पिता का नाम-श्री मौजीलाल
३. स्थान/पता-ललितपुर (कचहरी रोड)
४. जन्म-१९०७ ई०
५. वर्तमान आयु-६४ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४२ में ४ माह
७. अन्य विवरण-



पं० परमेष्ठीदास जी जैन की प्रारम्भिक शिक्षा ललितपुर में हुई। पश्चात् साहूमल्ल, मोरेना, जबलपुर और इन्दौर के विद्यालयों में अध्ययन करके 'जैन सिद्धान्त शास्त्री' एवं 'न्यायतीर्थ' की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

सन् १९२९ में आप सूरत (गुजरात) चले गये। वहाँ 'जैन मित्र' पत्र का सम्पादन किया। १९४४ में प्रसिद्ध कथाकार और निबन्धकार श्री जैनेन्द्र कुमाश् के साथ 'लोक जीवन' मासिक पत्र का सम्पादन किया।

गुजरात में हिन्दी के प्रचार के लिये आपने सन् १९३२ में, सूरत में, हिन्दी-प्रचारक-मण्डल की स्थापना की थी, जिसके अन्तर्गत सूरत में २० हिन्दी-स्कूल चलते हैं। आप राष्ट्र-भाषा-प्रचार समिति, वर्धा, की स्थापना के समय से ही उसके सदस्य रहे। आपने संस्कृत और गुजराती से लगभग २५ ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी में किया। लगभग १५ पुस्तकों की रचना भी आपने की।

हिन्दी भाषा का प्रचार-कार्य महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों में से एक महत्व पूर्ण कार्य था। इस कार्य में आप पूरी तन्मयता से लगे रहे। सन् १९४२ के स्वाधीनता आन्दोलन में आपने अपने लेखों और भाषणों से अनेक व्यक्तियों को सत्याग्रह आन्दोलन करने की प्रेरणा दी। आप स्वयम् उस आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते हुये बन्दी बनाये गये और पहले सूरत जेल में रखे गये, बाद में आपको साबरमती जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया। जेल में रहकर भी आपने हिन्दी-प्रचार-कार्य नहीं छोड़ा और स्वर्गीय जी० बी० मावलंकर के सहयोग से सहस्राधिक जेल-साथियों को राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, वर्धा, की परीक्षाओं में सम्मिलित करवाया।

सन् १९४८ में आप ललितपुर लौट आये। ललितपुर में आप जैनेन्द्र-प्रेस का संचालन करते हैं। यहीं से सुविख्यात जैन साप्ताहिक पत्र 'वीर' का सम्पादन-कार्य आप करते हैं। इस पत्र का सम्पादन आप सन् १९३२ से कर रहे हैं। आप ललितपुर के श्री वर्णी जैन इन्टर कॉलेज एवं श्री नेहरू महाविद्यालय की संचालन समितियों के सदस्य हैं।

१. नाम-श्रीमती कमला देवी
२. पति का नाम-श्री पं. परमेष्ठीदास
३. स्थान पता- ललितपुर
४. जन्म-तिथि ज्ञात नहीं
५. वर्तमान आयु- ५७ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष- १९४२ में ५ माह
७. अन्य विवरण—



श्रीमती कमला देवी जी ने इस उपक्षेत्र की नारियों को गौरव और गरिमा के पद पर सुशोभित कराया । आप भारतीय नारी की पुरापरम्परा की स्मृति दिलाती हैं । अपने कुल का नाम रोशन करते हुये, तात्कालिक नारी वर्ग को अभिनव दिशा देते हुये राष्ट्रव्यापी सन् १९४२ ई० के जन-आन्दोलन में सक्रिय भाग लेते हुये भारत रक्षा कानून की दफा ५६ के अन्तर्गत आप जेल में ५ माह रहीं । इस समय आपने दफा १४४ को भंग करके जुलूसों का नेतृत्व किया था सभाबन्दी कानून भंग करके सभा में भाषण देने के कारण आपको साबरमती जेल में रहना पड़ा । वस्तुतः ललितपुर का सम्पूर्ण परिसर आपकी देश के प्रति इस निष्ठा का सदैव ऋणी रहेगा ।

[३३]

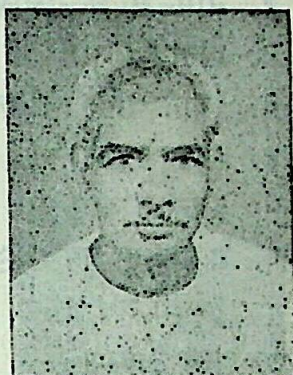
१. नाम—श्री जानकीप्रसाद पाटकार
२. पिता का नाम—श्री पल्लू उर्फ
नारायणदास
३. स्थान / पता—ललितपुर
४. जन्म—१९२० ई०
५. वर्तमान आयु—५२ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष १९४२ में १ वर्ष तथा
१००) अर्थ-दण्ड
७. अन्य विवरण—



किशोरावस्था से ही ललितपुर परिसर के राष्ट्रीय आन्दोलन की लहर से प्रभावित होते हुये सन् ३० के पश्चात जुलूस आदि में भाग लेते रहे। सन् १९४२ के देशव्यापी आन्दोलन की गतिविधियों में भाग लेकर एक वर्ष का कठोर कारावास प्राप्त किया। जुर्माना न देने के कारण दो मास और जेल में रहे।

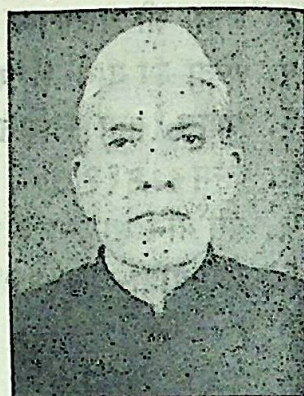
आज कल आप अपनी दुकान पर जीवन-यापन करते हुये अब भी नई पीढ़ी में यदा-कदा प्रेरणा भरते रहते हैं।

१. नाम-श्री सुखलाल इमलिया
२. पिता का नाम-श्री परमानन्द
३. स्थान / पता ललितपुर
४. जन्म-१९१६ ई०
५. वर्तमान आयु-५३ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४२ में १ वर्ष तथा
१००) अर्ध-दण्ड
७. अन्य विवरण—



अपने अग्रज श्री वृन्दावन इमलिया, जो स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख प्रणेता थे, से प्रभावित होकर परिवार के भरण-पोषण की परवाह न करते हुए भारत-माता को स्वतंत्र कराने हेतु स्वयं भी सेनानियों की कतार में खड़े हो गए। जिससे परिवार गहन अर्थभाव से पीड़ित रहा, लेकिन देश-प्रेम ने परिवार को प्रमुखता नहीं दी। आजादी की लड़ाई लड़ने वाले योद्धाओं में बहुत ही कम ऐसे परिवार हैं जिन्होंने परिवार को गौण और देश की प्रमुखता प्रदान की। आजादी के प्रेरणाताओं ने जो भी कार्य, सोंपा उसे आपने निर्भीकता पूर्वक पूरा किया। वर्तमान में आप राजनीति से दूर नहीं हैं। अन्याय, के प्रति आवाज उठाते रहते हैं। नगर दोनों भाईयों के देश-प्रेम पर गौरव का अनुभव करता है।

१. नाम-श्री धन्नालाल गुढ़ा
२. पिता का नाम-श्री मूलचन्द गुढ़ा
३. स्थान / पता ललितपुर
४. जन्म-२५।६।१९१४ ई०
५. वर्तमान आयु-५८ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष-१९४२ में १ वर्ष,
१००) अर्थ दण्ड
७. अन्य विवरण—

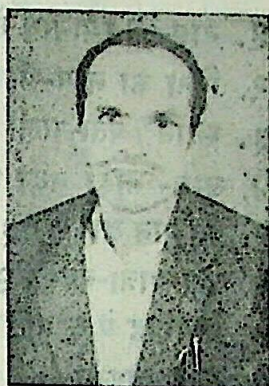


अंग्रेजी सरकार के प्रति विरोध प्रगट करवाने के लिए आपने बलबल जगाया। ओजस्वी भूषणों से जनता में आजादी की भावना को फैलाया। हड़तालें करवाने में आप अगुआ रहे। विद्रोहात्मक गतिविधियों के कारण शासन के सिर दर्द बने रहे। १९४२ के आन्दोलन में आपकी गिरफ्तारी डी. आई. आर. के अन्तर्गत हुई, जिसमें १ वर्ष का कठोर कारावास तथा १०० रुपया का अर्थिक दण्ड हुआ। आजादी के उपरान्त आप समाजवादी पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। वर्तमान में समाज-सेवा आपका एक मात्र लक्ष्य है।



[३६]

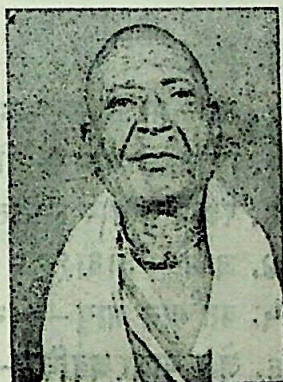
१. नाम- श्री प्यारेलाल कुशवाहा
२. पिता का नाम- श्री सालिकराम,
प्रेरणादायक-श्री वृन्दावन इमलिया
३. स्थान / पता- ललितपुर
४. जन्म- १८-११-१९१६ ई०
५. वर्तमान आयु ५३ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष - १९४२ में १ वर्ष
तथा ५०) अर्थ दण्ड
७. अन्य विवरण—



कुशवाहा परिवार में राष्ट्रीय आन्दोलनकारियों में आपका प्रमुख स्थान है। श्री वृन्दावन इमलिया का प्रेरणा से आप सन् ४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में झांसी जेल में रह चुके हैं। विभिन्न जुलूसों-हड़तालों में आप विशिष्ट सहयोगी रहे हैं।



१. नाम- श्री कल्लूगाम यादव
२. पिता का नाम- श्री जानकीप्रसाद
३. स्थान / पता- हाल ग्राम वरेठ, रामनग.
बंशीपुरा (ललितपुर)
४. जन्म- १९०० ई०
५. वर्तमान आयु- ७२ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष- १९३० में १ वर्ष
७. अन्य विवरण—



मध्यम वर्गीय परिवार में जन्में श्री यादव ने सन् १९३० में बापू के आह्वान पर सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेकर १ वर्ष की कठोर सजा पाई। आप नगर ललितपुर के अग्रणी नेताओं की पंक्ति में थे।



[३७]

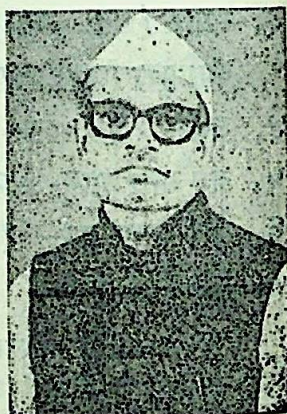
६. नाम-श्री रमानाथ खैरा
२. पिता का नाम-श्री जगन्नाथप्रसाद खैरा
३. स्थान / पता-पाली (ललितपुर)
४. जन्म- भादों सुदी ४ १९६७ वि.
३. वर्तमान आयु- ६३ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष- १९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह में ६ माह तथा १००) अर्थ-दण्ड
७. अन्य विवरण —



आपने नमक सत्याग्रह में भाग लिया। नवयुवकों को जन-आन्दोलन के प्रति उत्साहित किया। सन ४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेल यात्रा की। जेल में भी अन्य साथियों को संघर्ष के हेतु प्रोत्साहित करने पर फतेहगढ़ जेल में भेज दिये गये। बी. ए., एल-एल. बा. तक शिक्षा प्राप्त करके आज कल आप वकालत करते हैं एवं प्रसिद्ध वकील हैं। उ० प्र० विधान सभा के आप कांग्रेस टिकिट पर अनेक वर्षों तक एम. एल. ए. रहे।



१. नाम-श्री शिखरचन्द सिंघई
२. पिता का नाम—श्री कुन्दनलाल जैन
३. स्थान पता—ललितपुर
४. जन्म — ३/६/१९२१ ई०
५. वर्तमान आयु—५२ वर्ष
६. जेल यात्रा अवधि—अगस्त १९४२ में १ वर्ष तथा १००) अर्थ-दण्ड
७. अन्य विवरण —



१९४२ के सामूहिक आन्दोलन 'करो या मरो' की भावना के

[३८]

वशीभूत होकर धारा १४४ तोड़ने पर १ वर्ष की सजा तथा १००) न देने पर २ माह का कठोर कारावास हुआ। झांसी तथा फैजाबाद जेल में रहे। वर्तमान में समाज-सेवा में लीन हैं।



१. नाम-श्री बाबूलाल घी वाले
२. पिता का नाम-श्री धरमदास जैन
३. स्थान / पता-ललितपुर
४. जन्म-१९७२ ई०
५. वर्तमान आयु-६० वर्ष
६. जेल-यत्रा-१९४२ में १ वर्ष तथा १००) अर्ध-दण्ड
७. अन्य विवरण —

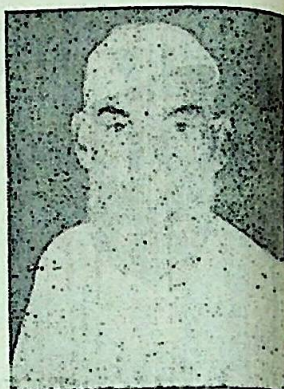


सन् १९४२ के सामूहिक आन्दोलन 'करो या मरो' की प्रेरणा पाकर दफा १४४ का उल्लंघन कर १ वर्ष की सजा तथा १००) रु० जुर्माना हुआ। देश-प्रेम में अपना उन्नतशील व्यपार छोड़कर सत्याग्रही बने। श्री बाबूलाल वर्तमान में सरल जीवन-यापन कर रहे हैं।



[३६]

१. नाम—श्री अहमद खां पहलवान
२. पिता का नाम—श्री अकबर खां
३. स्थान पता—ललितपुर
४. जन्म—१६०६ ई०
५. वर्तमान आयु— ६३ वर्ष
६. जेल-यात्रा—१६४१ में ६ माह
१५) अर्थ दण्ड
७. अन्य विवरण—



व्यक्तिगत आन्दोलनों में जहां राजनैतिक, सामाजिक कार्यकर्ता भाग ले रहे थे वहां अखाड़े का खिलाड़ी कैसे मौन धारण कर कायर बना रह सकता था। स्वाधीनता की भावना ने, स्वतंत्रता संग्राम के क्षेत्र में कूदने को विवश किया। शहर में अंग्रेजों के खिलाफ आवाज बुलन्द की तथा जेल जाकर देश-प्रेम का परिचय दिया।

★

१. नाम—श्रीमती केशरवाई
२. पति का नाम—श्री मोतीलाल जैन
३. स्थान—ललितपुर
४. जन्म—अक्टूबर १६१५ ई०
५. वर्तमान आयु— ५७ वर्ष
६. जेलयात्रा—१६४१ में १ माह
७. अन्य विवरण—



स्वतंत्रता आन्दोलन के महान एवं दुस्सह कार्य में जहां किशोरों-नौजवानों ने अपना योगदान किया, वहाँ नगर की यह नारी-

नारी जाति के लिए गौरव है। १९३६ से गांधी जी की प्रेरणा से रण क्षेत्र में कूद पड़ी। ऐसी उम्र में ऐसे समय में जब नारी केवल श्रृंगार एवं घर की चार दीवारी तक ही सीमित रहती थी। केशरबाई ने लोक-लाज भारत-माता के चरणों में अर्पित कर दी। समाज के बन्धन तोड़ कर नारी-जाति को जाग्रत करने में जुट गई, नवयौवना को अलख जगाते देख नव जवानों को आजादी की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा मिली। वर्तमान में कांग्रेस की सक्रिय कार्यकर्ता हैं। अन्याय के प्रति संघर्ष की आवाज बुलन्द करती रहती हैं।

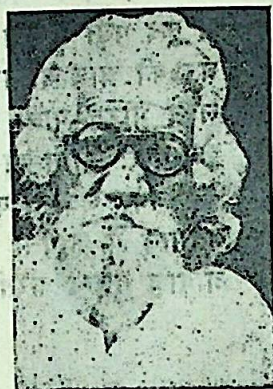
१. नाम— श्री खूबचन्द पुष्प
२. पिता का नाम—श्री खुशालचन्द मोदी
३. स्थान / पता—पिपरई ललितपुर
४. जन्म-अषाढ़-१९८१ वि०
५. वर्तमान आयु- ४८ वर्ष
६. जेल-यात्रा-१९४२ में १ वर्ष तथा ५००) अर्थ दण्ड
७. अन्य विवरण—



‘पुष्पजी’ की ओज पूर्ण वाणी ने जो जन जाग्रति की, उससे जन-समुदाय में चेतना की लहर दौड़ी। आप राष्ट्रीय कवितायें सुना सुना कर देश-प्रेम के प्रति लोगों की भावना को उभारते हुये ललितपुर में बन्दी बना लिये गये। आपको दफा १४४ तोड़ने एवं विद्रोही कविता-पाठ के कारण ६ माह की कठोर सजा तथा ५००; जुर्माना अदा न करने पर ६ माह की और कठोर सजा भोगनी पड़ी। वर्तमान में आप अपना व्यापार करते हैं।

[४१]

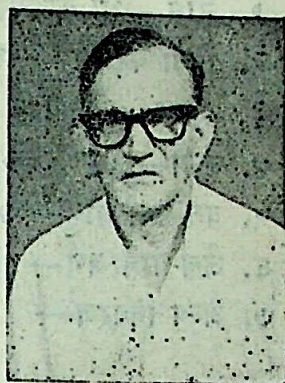
१. नाम-श्री भैरोंप्रसाद राय
२. पिता का नाम-श्री मूलचन्द राय
३. स्थान पता-बार
४. जन्म—कार्तिक वदी ५ सम्बत
१९५३ वि०
५. वर्तमान आयु-६६ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९३०, १९३१
१९४२ में कुल मिलाकर २ वर्ष
७. अन्य विवरण—



श्री भैरोंप्रसाद राय बार अंचल (ललितपुर) के राष्ट्रीय आन्दोलन के यदि नायक कह दिये जायें तो अत्युक्ति न होगी । १९३०-३१ में नमक-सत्याग्रह में जेल-यात्रा की । १९३१ में बल्देबगढ़ में आन्दोलन के संदर्भ में कैद हुये तथा १९४१ में १ वर्ष की सजा, भोगी और १९४२ में देशव्यापी आन्दोलन में भाग लेने के कारण ११ माह को आगरा जेल में नजर बंद रहे । रायजी गांधीवादी कर्मठ कार्यकर्ता, हैं और अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता रहे हैं ।

[४२]

१. नाम—श्री मणिगम कंचन
२. पिता का नाम—श्री पन्नालाल खत्री
३. स्थान / पता—तालबेंहट
४. जन्म—१३/१/१९०३ ई०
५. वर्तमान आयु—६० वर्ष
६. जेल—गुवाहाटी वर्ष—१९३२ में ३ माह
१९४० में १ वर्ष १९४१ में १५ माह,
१९४२ में नजरबन्द ५५ दिन



७. अन्य विवरण—

श्री मनीराम कंचन ने विद्यार्थी जीवन से ही सार्वजनिक एवं राजनैतिक कार्यों में भाग लेना आरम्भ कर दिया था। १९३२ ई० से ही आप आजादी के महायज्ञ में कूद पड़े और लगातार १९४२ तक संघर्ष-रत रहे। फलस्वरूप उपरोक्त तिथियों में जेल में अति यातनायें दी गयीं, पर आप अडिग रहे। तालबेंहट, ललितपुर और झांसी इनके कार्य क्षेत्र रहे। जुलूस, हड़ताल व शराब की दुकानों पर जान को जोखम में डालकर पिकेटिंग करते रहे। १९३१ से १९६३ तक जिलाबोर्ड के सदस्य रहे। वर्तमान में आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा झांसी जिला-कांग्रेस-कमेटी के प्रधान मन्त्री हैं। आप एक कर्मठ प्रतिभावान पत्रकार भी हैं तथा दैनिक प्रकाश, दैनिक प्रभात, साप्ताहिक जन-संग्राम, संयुक्त-मोर्चा आदि पत्र निकालते रहे हैं।

[४३]

१. नाम—श्री कन्हैयालाल कड़ेरे
२. पिता का नाम—श्री तुलसीराम
३. स्थान—तालबेहट
४. जन्म—१९०० ई०
५. वर्तमान आयु—७२ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष—१९३० में ६ माह
७. अन्य विवरण—



श्री कड़ेरे जी ने सविनय अवज्ञा-आन्दोलन से प्रेरित होकर सन ३० में ललितपुर में विलायती माल का बहिष्कार किया, तथा ललितपुर जेल में रहे ।

★

१. नाम—श्री वृजनन्दन पस्तोर
२. पिता का नाम—श्री रामचरन पस्तोर
३. स्थान / पता—तालबेहट
४. जन्म—सं० ७२ वि०
५. वर्तमान आयु—५८ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष—१९४० में १ वर्ष व ३ माह
७. अन्य विवरण—



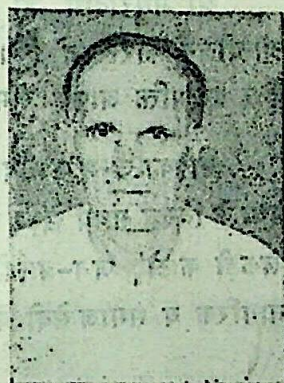
भारत के अन्दर जिस नगर ने स्वतंत्रता संग्राम के लिये योद्धा अर्पित किए उनमें तालबेहट ने जो योग दिया वह सराहनीय रहा.

[४४]

निडर- निर्भीक योद्धाओं में श्री पस्तोर जी का त्याग अनुकरणीय रहा । आपने अंग्रेजों से संघर्ष करने में लगातार १५ मास का दण्ड भोगा । तालबेहट नगरी इस सपूत पर गर्व करती है ।



१. नाम-श्री जमुनादास चौबे
२. पिता का नाम-श्री पजनलाल चौबे
३. स्थान पता-खाँदी तालबेहट
४. जन्म-१५/१०/१८९६ ई०
५. वर्तमान आयु-५७ वर्ष
६. जेल-यात्रा-१८४१ में ६ माह (२५)
दण्ड न देने पर ३ माह और सजा
७. अन्य विवरण—

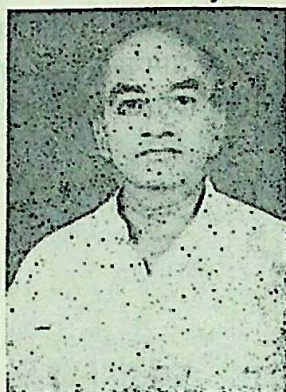


श्री चौबे जी खाँदी तालबेहट-ललितपुर क्षेत्र में १८४१ के आस-पास प्रसिद्ध आन्दोलनकारी रहे हैं । देश-सेवा के लिये आज भी तत्पर रहते हैं ।



[४५]

१. नाम—श्री मथुरादास लिटोरिया
२. पिता का नाम—श्री रामचरनलाल
३. स्थान पता—तालवेहट
४. जन्म-१२।८।१९१२ ई०
५. वर्तमान आयु—६० वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१ में ६ माह तथा
१००) दण्ड
७. अन्य विवरण—



श्री मथुरादास जी लिटोरिया तालवेहट के प्रसिद्ध राष्ट्रीय आन्दोलनकारी रहे हैं। १९४१ में ६ माह की सजा भी काट चुके हैं। देशभक्ति आपके रोम-रोम में रमी थी और आज भी है।

आपका जन्म जमींदार परिवार में होते हुए भी आपने जमींदारी-प्रथा के विरुद्ध संघर्ष छेड़ा और किसानों का नेतृत्व किया। तालवेहट का 'लकड़ी काटो' जन-आन्दोलन आपके नेतृत्व में हुआ। सभ्रान्त नागरिक व समाज सेवी के रूप में आज आपकी सेवाएँ सराहनीय हैं।



[४६]

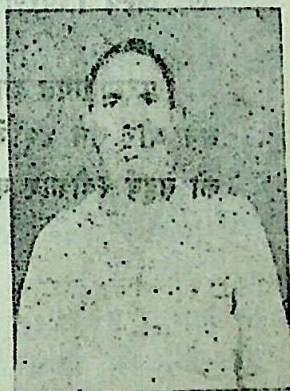
१. नाम-श्री गोपालदास जैन
२. पिता का नाम-श्री सवाई
३. स्थान/पता-सादूमर
४. जन्म-१९१२ ई०
५. वर्तमान आयु-६० वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१, १९४२
में क्रमशः ६ माह व १ वर्ष
७. अन्य विवरण-



पेशे से व्योपायी हैं, किन्तु स्वतंत्रता-संग्राम में आपनी आहुति देने में पीछे नहीं हटे। सन ४१ में व्यक्तिगत आन्दोलन करके डी. आई. आर. में ६ माह की सजा भोगी। सन १९४२ में 'करो या मरो' का नारा देकर नेताओं ने स्वतंत्रता प्रेमियों का आव्हान किया था। आपने पुनः १९४२ में १ वर्ष की जेल यात्रा की।

★

१. नाम-श्री कुन्जीलाल स्वर्णकार
२. पिता का नाम-श्री भगवानदास
३. स्थान / पता-सादूमर
४. जन्म-१९१० ई०
५. वर्तमान आयु-६२ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष-१९४१ व १९४२ में
क्रमशः ६ माह व ३ वर्ष की सजा
७. अन्य विवरण-



डी. आई. आर. के अंतर्गत सन् १९४१ में व्यक्तिगत आन्दोलन में

[४७]

आपको ६ माह का कठोर कारावास हुआ। जेल से छूटने के बाद सन् १९४२ में 'करो या मरो' के सत्याग्रह में १ वर्ष की सजा काटनी पड़ी। आपने गांव गाँव जाकर क्रान्ति की लहर प्रवाहित की।



१. नाम-श्री गजराजसिंह
२. पिता का नाम-श्री बख्तावरसिंह
३. स्थान / पता-वानपुर
४. जन्म-१९१२ ई०
५. वर्तमान आयु-६० वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष-१९४२ में १
की सजा १००) दण्ड
७. अन्य विवरण—



परम्परागत शासकों की प्रवृत्तियों को छोड़कर सच्चे गांधी-वादी बने और सन ४२ में १ वर्ष का कारावास तथा १०० रुपये के दण्ड को सहर्ष स्वीकार कर देश-प्रेम को प्रदर्शित किया।



[४६]

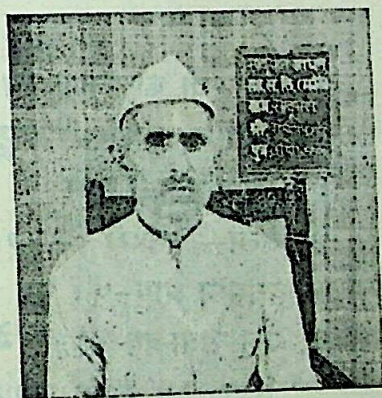
१. नाम- श्री गुलाबचन्द टेलर मास्टर
२. पिता का नाम- श्री मसाई
३. स्थान / पता- सादूमल
४. जन्म- १९१२ ई०
५. वर्तमान आयु- ६० वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष-१९४१ में व्यक्तिगत आन्दोलन में ३ माह की सजा
७. अन्य विवरण —



गांधी जी द्वारा चलाए गए आन्दोलन में साहसी, त्यागी सैनिक रहे तथा व्यक्तिगत आन्दोलन में ४ माह की सजा काटी।



१. नाम- श्री वल्लदेवप्रसाद
२. पिता का नाम- श्री अयोध्याप्रसाद
३. स्थान / पता-सादूमल
४. जन्म-१९१७ ई०
५. वर्तमान आयु-५५ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१ में ६ माह की सजा
७. अन्य विवरण—

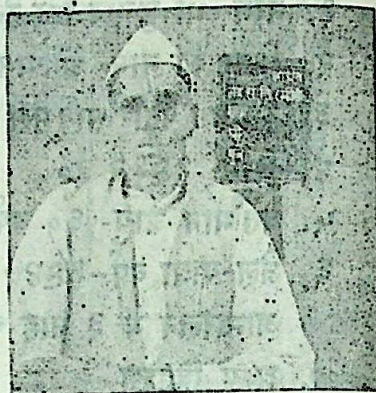


आपने स्वतंत्रता संग्राम में कूद कर सन् १९४१ में ६ माह की सजा पाई। व्यक्तिगत आन्दोलन में आपके संघर्ष की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई थी।



[४६]

१. नाम-श्री दयागम पांडे
२. पिता का नाम-श्री मुन्नालाल पांडे
३. स्थान पता-सादुमल
४. जन्म-१९२० ई०
५. वर्तमान आयु- ५२ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१ में ३ माह



७. अन्य विवरण—

आप साहसी आन्दोलनकारी रहे हैं। आपने गांधी जी के आवाहन पर व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत सन् ४१ में ३ माह की जेल यात्रा भोगी।

१. नाम-श्री कपूरचन्द जैन
२. पिता का नाम-श्री पल्लूराम
३. स्थान पता-सैदपुर
४. जन्म—जनवरी १९२१ ई०
५. वर्तमान आयु-५१ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९३१ में ६ माह की सजा, २५ रुपया जुर्माना
७. अन्य विवरण—



श्री विजय कृष्ण शर्मा के साथ गोपनीय क्रांतिकारी आन्दोलन में भाग लिया और सन् ४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेल यात्रा की। आपको ६ माह की सजा एवं २५ रुपया व्यर्थ दण्ड हुआ। आप

[५०]

झांसी तथा वाराणसी जेल में रहे । भारत आजाद होने के बाद भी देश प्रेम की खातर आप १९४८-४९ तक प्रान्तीय रक्षा-दल में रहे ।



१. नाम-श्री बहोरे गड़गिया
२. पिता का नाम-श्री भगुन्ते
३. स्थान / पता-सैदपुर
४. जन्म-तिथि ज्ञात नहीं
५. वर्तमान आयु-६० वर्ष
६. जेल-यात्रा-४ अप्रैल १९४१ में ६ माह
७. अन्य विवरण -



श्री बहोरे जी सैदपुर के नामी-ग्रामी क्रान्तिकारी रहे हैं। आप ४१-४२ के आन्दोलन में ६ माह की सजा काट चुके हैं।



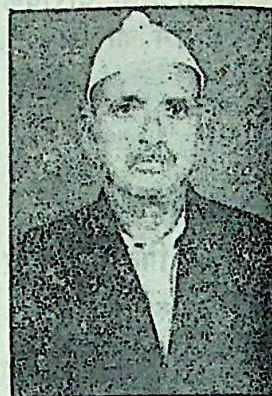
१. नाम-श्री शिवराजसिंह
२. पिता का नाम-श्री किशोरसिंह
३. स्थान पता- जलंधर (सैदपुर)
४. जन्म-६।८।१९०६ ई०
५. वर्तमान आयु-६६ वर्ष
६. जेल-यात्रा-१९४१ ई०
७. अन्य विवरण—



सन १९४१ में गौना थाना नारहट में सत्याग्रह करने पर ६ माह की सजा और १००) अर्थ दण्ड हुआ ।

[५१]

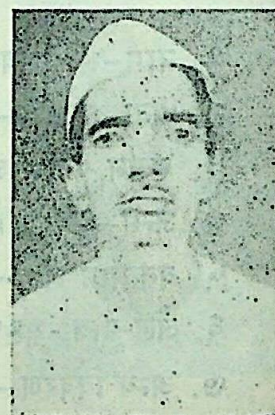
१. नाम—श्री चतरे हरिजन (चमार)
२. पिता का नाम—श्री करन्जू
३. स्थान / पता—सैदपुर
४. जन्म—१९१७ ई०
५. वर्तमान आयु—७० वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष—१९४१
४ माह (पेन्शनर)
७. अन्य विवरण—



अभावों में पले किन्तु भावों के धनी श्री चतरे देश हितार्थ सबर्णों की भांति स्वतंत्रता-संग्राम में उतर पड़े। अंग्रेजों को दिखाने के लिए कि भारत में रहने वाला प्रत्येक नागरिक देश-प्रेमी है देश के नेताओं के आव्हान पर १९४१ में आपने जेल-यात्रा की और ४ माह तक जेल में रहे। भारत सरकार ने आपको पेन्शन दी है।

★

१. नाम—श्री कुन्दनलाल वर्मा
२. पिता का नाम—श्री सुखलाल
३. स्थान—मंडावरा
४. जन्म—१९१६ ई०
५. वर्तमान आयु—५३ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष—१९४१ में ४ माह
७. अन्य विवरण—



व्यक्तिगत आन्दोलन में भाग लेने पर सन १९४१ में ६ माह के कठोर कारावास की सजा हुई। आज कल भी आप कांग्रेस के

कार्यकर्ता हैं। किसानों के हित को ध्यान में रखकर उनके लिए कार्य करते रहते हैं।



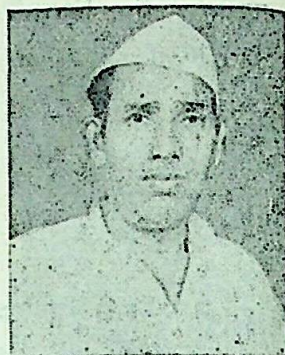
१. नाम-रतीराम हुन्दैत
२. पिता का नाम श्री जुगलकिशोर हुन्दैत
३. स्थान / पता-ललितपुर
४. जन्म-तिथि अज्ञात।
५. वर्तमान आयु-लगभग ४८ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष-१९६१ में ३ माह की जेल यात्रा
७. अन्य विवरण-



देश में जो स्वतंत्रता आन्दोलन की ज्वाला घड़क रही थी, उसमें यह बांका नौजवान कब पीछे की पंक्ति में खड़ा रह सकता था। अध्ययन काल में विद्यार्थियों का नेतृत्व किया। तत्कालीन शासन की संचार व्यवस्था व आवागमन के मार्गों का अवरोध किया। तोड़ फोड़ का वारंट निकलने पर आप फरार हो गये और उरई में विद्यार्थियों के आन्दोलन का नेतृत्व करते हुये गिरफ्तार हुये। हृदय बिदारक क्रूर-कठोर यातनाओं से पीड़ित हुये ३ माह के कठोर कारावास की सजा काटकर स्वतन्त्र भारत में भी देश-रक्षार्थ सेना में अध्यापक हैं।



६. नाम-श्री हरिकृष्ण देवलिया
२. पिता का नाम-श्री देवीप्रसाद
३. स्थान / पता- ललितपुर
४. जन्म-तिथि अज्ञात
३. वर्तमान आयु-लगभग ४८ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष- १९४२ में ३ माह
७. अन्य विवरण —



देश को आजाद कराने में जहां वकील, साहित्यकार, व्यापारी, कास्तकार अपना योग दे रहे थे, वहां विद्यार्थी वर्ग भी पीछे नहीं रहा, ललितपुर को इसका गौरव है। श्री देवलिया जी विद्यार्थी जीवन में ही स्वतंत्रता की भावना संजोये हुये थे। फलत अध्ययन को गौण बनाकर मुख्य ध्येय आजादी और भारत माता क पैरो की बेड़ी तोड़ने में लग गये। सन ४२ के आन्दोलन में ३ माह की सजा पाई। नगर के विद्यार्थी वर्ग में अपने विशिष्ट कार्य के कारण सम्मान प्राप्त किया। आजकल आप मध्य रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर हैं।



१. नाम-श्री काशीनाथ शास्त्री
२. पिता का नाम—श्री अयोध्याप्रसाद
तिवारी
३. स्थान पता—दैलवारा
४. जन्म - तिथि ज्ञात नहीं
५. वर्तमान आयु—७० वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष—असहयोग आन्दोलन
६ माह की सजा सन १९३२ में
७. अन्य विवरण —



ललितपुर-परिसर के दैलवारा ग्रामीण अंचल के अलावा आपने आन्दोलन के माध्यम से अन्य क्षेत्रों में भी राजनैतिक एवं सामाजिक कार्य किये। कांग्रेस रिलीफ सोसायटी की ओर से नोआ-खाली में, बिहार के भूकम्प से प्रताड़ित जनता की, चम्पारन-मोतीहारी क्षेत्र में, सहायता-कायं किया। इसके अतिरिक्त काशी में भारत-सेवा-मंडल में व्यायाम शिक्षा प्रसार और नवयुवकों के हेतु ललितपुर में भारत-सेवा मंडल की स्थापना की। १९४१ से शाहगंज जिला जौनपुर में व्यायाम शिक्षा का शिक्षण कार्य किया।

[५५]

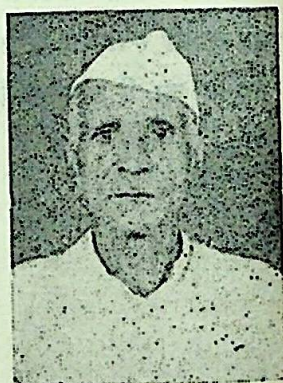
१. नाम-श्री तेजसिंह
२. पिता का नाम-श्री प्यारेलाल लोधी
३. स्थान / पता-गूगर (तालवेडट)
४. जन्म तिथि अज्ञात
५. वर्तमान आयु-लगभग ५२ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१७-४-४१ में ३८ डी.
आई. आर. में १ माह १००) जुर्माना
७. अन्य विवरण—



जैसा नाम वैसा काम। देश में डी. आई आर लागू करके अंग्रेजों ने आन्दोलनों को कुचलने की नापाक कोशिश किए कानून का बन्धन कब देश प्रेम की भावना को विवश कर सकता है। श्री तेजसिंह ने की गांव गांव में आजादी का जयघोष किया डी आई आर, के अन्तर्गत १ माह की सजा तथा १०० रुपयों का अधिक दण्ड भोगना स्वीकार किया, लेकिन पौरुष दिखाने से पीछे नहीं हटे !



१. नाम-श्री ठा० देवीसिंह
२. पिता का नाम-श्री सरदारसिंह
३. स्थान पता-बानपुर
४. जन्म-जून १९१० ई०
५. वर्तमान आयु- ६२ वर्ष
६. जेल-यात्रा-१९४१ में १ वर्ष जेल
व १००) अर्थ दण्ड
७. अन्य विवरण—



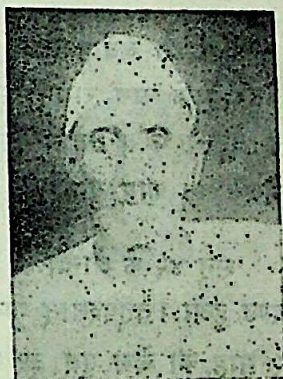
१८५७ के विद्रोह में जूझने वाले बाँकुरे महाराज मर्दनसिंह बानपुर वालों की नगरी ने अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध सदैव संघर्ष

[५६]

जारी रखा । श्री देवीसिंह जी वंश परम्परा का गौरव बढ़ाते हुये श्रीनंदकिशोर किलेदार तदनन्तर श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन में कार्यरत हुये जिससे वानपुर (ललितपुर) का गौरव और गरिमा बढ़ी । आज कल आप अपने ग्राम में ही अर्थाभाव में भी देश-सेवा के हेतु कार्य करते रहते हैं ।

★

१. नाम—श्री रामलाल यादव
२. पिता का नाम—श्री अयोध्याप्रसाद
३. स्थान—वानपुर
४. जन्म— १९०२ ई०
५. वर्तमान आयु— ७० वर्ष
६. जेलयात्रा—१९४२ में १ वर्ष (१००) जुर्माना
७. अन्य विवरण—



वानपुर में प्रसिद्ध क्रांतिकारी आन्दोलनकर्ता श्री यादव ने सन् ४२ के देश व्यापी आन्दोलन में भाग लिया और १ वर्ष सख्त सजा भोगी ।

[५७]

१. नाम— श्री गोरेलाल वर्मा
२. पिता का नाम—श्री उद्येत वर्मा
३. स्थान / पता—बानपुर
४. जन्म- ५-५-१९१८ ई०
५. वर्तमान आयु- ५४ वर्ष
६. जेल-यात्रा-१९४२ में
७. अन्य विवरण—

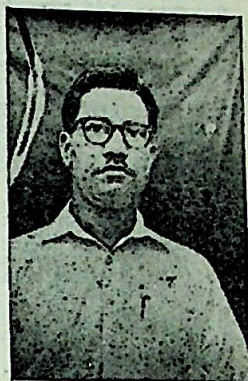


पंडित जवाहरलाल नेहरू के भाषण से प्रेरणा पाकर स्थानीय नेताओं के साथ राजनीति में भाग लेने लगे। पंडित रामेश्वरप्रसाद शर्मा के नेतृत्व में क्रान्तिकारियों के लिए सन्देश-वाहक व खाद्य सामग्री भेजने का कार्य गुप्त रूप से बहुरूपियों के रूप में करते रहे।

सन् ४२ के आन्दोलन में १ वर्ष का कठोर कारावास तथा १००) अर्थ दण्ड हुआ। तत्पश्चात् गुप्त कार्य करते हुए पकड़ लिये गये और पुनः २ माह की जेल एवं ३५ रुपया अर्थ दण्ड हुआ। स्वास्थ्य गिरने के कारण अधिकारियों ने २१ दिन बाद छोड़ दिया, अर्थ दण्ड के सिलसिले में मकान को कूकीं हुये। आज तक देश हितार्थ कार्य में रत हैं।

[५८]

१. नाम—श्री घनश्यामदास
२. पिता का नाम—श्री लक्ष्मणप्रसाद
३. स्थान / पता—लुहरी (मंडावरा)
४. जन्म—१५/५/१९२४ ई०
५. वर्तमान आयु— ४९ वर्ष
६. जेल—यात्रा वर्ष—१९०२ में ६ माह की सजा
७. अन्य विवरण—



घन्य है वह कोख जिससे ऐसा सपूत जन्मा । १८ वर्ष की अल्प आयु में देश-प्रेम की भावना के वशीभूत होकर यह तरुण स्वतंत्रता के महान यज्ञ में अपनी आहुति देने कूद पड़ा । सन ४२ में डी. आई. आर. के अन्तर्गत २९-१२-४२ से ५-६-४३ तक ६ माह जेल में रहे, वह भी बनारस जेल में ताकि परिवार या परिचितों से जेल समय तक मुलाकात न कर सके । नौजवानों के लिये प्रेरक बन गए । वर्तमान में यह स्वतंत्रता संग्राम का सेनानी जूनियर हाईस्कूल साढ़ूमर में अध्यापक हैं । जिस प्रकार भारत छोड़ो आन्दोलन में अन्यायी शासन के पहरदारों से मारपीट की, अन्याय का मुकाबला किया ; उसी भावना का संचार वर्तमान पीढ़ी में कर रहे हैं ।

[५६]

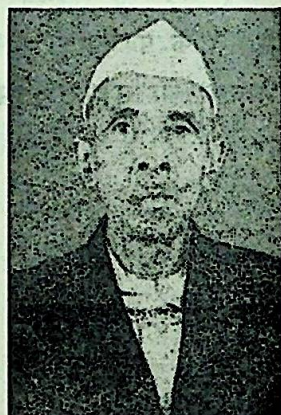
१. नाम—श्री खेमचन्द चौरसिया
२. पिता का नाम—श्री भगुन्तेलाल
३. स्थान पता—पाली
४. जन्म—१९१७ ई०
५. वर्तमान आयु—५५ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष—१९४१, १९४२ में
३ माह
७. अन्य विवरण—



क्रान्तिकारी धुन के पक्के श्री खेमचन्द जी को दो बार जेल यात्रा करनी पड़ी सन ४१ में आपको ४ माह का तथा सन ४२ में ३ माह का कठोर कारावास हुआ। क्रान्तिकारी स्थल पाली की गरिमा को बनाये रखने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। स्वभाव के कोमल विचारों के परिपक्व देश सेवा की भावना से ओत प्रोत श्री खेमचन्द चौरसिया पाली के किसान सत्याग्रह व लकड़ी काटो आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं।



१. नाम—श्री हरदास बाबू
२. पिता का नाम—अज्ञात
३. स्थान / पता—पाली
४. जन्म—१८९६ ई०
५. वर्तमान आयु—७६ वर्ष
६. जेल यात्रा अवधि—१९४० में ४
माह, १९४२ में नजरबंद ४ माह तक
७. अन्य विवरण—



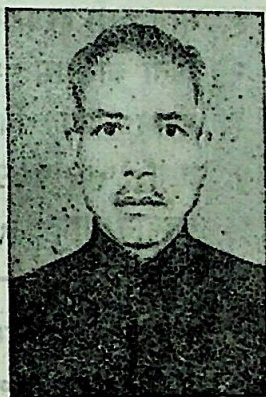
वामोरा मंडी में तार बाबू के पद पर कार्यरत रहते हुये राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने पर आपको अपनी एक मात्र आय

[६०]

का साधन का परित्याग करना पड़ा। आपको अंग्रेजी सरकार की सेवा करना आत्म-सम्मान के विपरीत लगा। आन्दोलनों में भाग लेना श्रेष्ठ लगा। नौकरी त्यागकर आप पाली में आ गए सन् १९४० में ४ माह का कठोर कारावास भोगने के बाद पुनः १९४२ में पकड़ लिए गये और नजर बन्द कर दिये गये। ४ माह की सजा ही काट पाई कि जेल में ही अपने दो युवा पुत्रों का दुःखद हृदय विदारक समाचार मिला कि वह स्वर्गवासी हो गए। सरकार ने उन्हें छोड़ दिया !

पुत्रों के वियोग से वह विचलित नहीं हुये मातृभूमि से अंग्रेज दरिन्दों को भगाने के लिये सक्रियता पूर्वक शासन विरोधी कार्य-वाहियों में अपना योग देते रहे फलतः पुनः सन् १९४५ में डी. आई. आर. के अन्तर्गत ४५ रुपया का अर्थ दण्ड भुगतना पड़ा। बाबूजी की त्याग तपस्या की स्वतंत्र भारत की पीढ़ी सदैव सम्मान के साथ सराहती रहेगी।

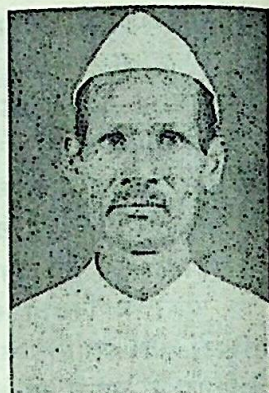
१. नाम-श्री मन्थूलाल चौरसिया
२. पिता का नाम-श्री खुमान
३. स्थान / पता-पाली
४. जन्म-१९१६ ई०
५. वर्तमान आयु-५३ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष-१९४१ में ६ माह ४०) दण्ड
७. अन्य विवरण—



सन ४१-४२ के पाली के आन्दोलनकारियों में आप प्रमुख हैं व ६ माह की जेल यात्रा काट चुके हैं।

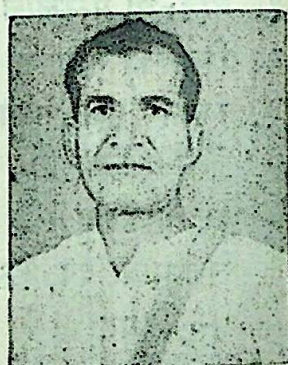
[६१]

१. नाम-श्री अयोध्याप्रसाद चौरसिया
२. पिता का नाम-अज्ञात
३. स्थान / पता-पाली
४. जन्म-तिथि-अज्ञात
५. वर्तमान आयु-अज्ञात
६. जेल यात्रा वर्ष-सन् १९४४ में
३ माह की सजा
७. अन्य विवरण-



शासन विरोधी गतिविधियों के कारण चौरसिया जी को अंग्रेजी सरकार ने डी. आई. आर. के अन्तर्गत गिरफ्तार किया और सन् १९४४ में ३ माह का कारावास दिया।

१. नाम-श्री हरप्रसाद शर्मा
२. पिता का नाम-श्री गजराज
३. स्थान / पता-पिपरई (धौर्गा)
४. जन्म-५/४/१९१६ ई०
५. वर्तमान आयु-५६ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष-१९४१ में ४ माह
तथा ५०) अर्थ-दण्ड सन् १९४२ में
६ माह तथा १०००) अर्थ दण्ड
७. अन्य विवरण-



श्री शर्मा महान क्रान्तिकारी सम्भूतनाथ आजाद एवं विजयकृष्ण के साथ व्यक्तिगत आन्दोलन में पूर्व नोटिस कलेक्टर को देकर पिपरई में सन् ४१ में बंदी बनाए गए। आपको ४ माह की सजा एवं ५० रु० का अर्थ दण्ड हुआ। जेल से बाहर आने पर क्रान्तिकारी गतिविधियों

[६२]

के जिले के संचालक के । आपने नारायण पुल को दायनामेन्ट लगा-
कर उड़ाया । सन् ४२ के आन्दोलन में आपको ४ माह की सजा और
१००० रुपयों का अर्थ-दण्ड हुआ । जीवन और मौत से संघर्ष करते
हुए आपने अंग्रेजो सरकार को उखाड़ने फेरने में जो काय किया, हम
स्वतन्त्रता में सांस लेने वाले सदैव उनके ऋणी रहेंगे ।

- १- नाम—श्री प्रागी उर्फ पूरनचन्द
नामदेव
- २- पिता का नाम—विहागीलाल
- ३- स्थान / पता—पिपरई बंट (धौरी)
- ४- जन्म—१९१२ ई०
- ५- वर्तमान आयु—६० वर्ष
- ६- जेल यात्रा वर्ष—१९३३ में ६ माह
- ७- अन्य विवरण —



श्री प्रागी जी पिपरई-बंट (धौरी) ललितपुर-क्षेत्र के असहयोग
आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं ।

[६३]

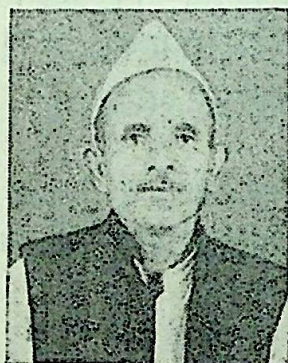
१. नाम—श्री भैयालाल यादव
२. पिता का नाम—श्री सीताराम
३. स्थान / पता—कपासी (धौरी)
४. जन्म—१९१२ ई०
५. वर्तमान आयु—६१ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष—१९४२ ई०
७. अन्य विवरण—



प्रसिद्ध कांग्रेसी राष्ट्रीय आन्दोलनकारी के रूप में कपासी-धौरी [ललितपुर] निवासी श्री यादव ने सन् ४२ में १४४ धारा के तोड़ने के उपलक्ष में १ वर्ष का सख्त कारावास भोगा। आज भी राष्ट्र के प्रति निष्ठा आपकी अप्रतिम विशेषता है।



१. नाम—श्री हरप्रसाद लोधी
२. पिता का नाम—श्री धरमदास
३. स्थान/पता—वरौदा विजलोन (जाखलौन)
४. जन्म—१९१७ ई०
५. वर्तमान आयु—५५ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष—१९४१ में ६ माह
दोनों बार १९४२ में १ वर्ष, १००)
७. अन्य विवरण—



शर्मा जी के नेतृत्व में श्री हर प्रसाद ने सन् १९४१ में ३, ३ माह की दोबार सजा भोगी। देश व्यापी १९४२ के आन्दोलन में भी

[६४]

आपको एक वर्ष का कारावास तथा १०० रु० का अर्थ दण्ड हुआ
आजादी की खातिर बार-बार जेल जाकर आपने मानृभूति की आजादी
के लिये जो आदर्श उगस्थित किया उसको हम सदैव सराहते रहेंगे ।



१. नाम - श्री जगन्नाथ यादव
२. पिता का नाम - श्री बल्देवप्रसाद
३. स्थान पता - सिन्दवाहा
४. जन्म - ज्ञात नहीं
५. वर्तमान आयु - ज्ञात नहीं
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१ में ६ माह की
सजा, ५०) दण्ड ३ माह की सजा
७. अन्य विवरण -

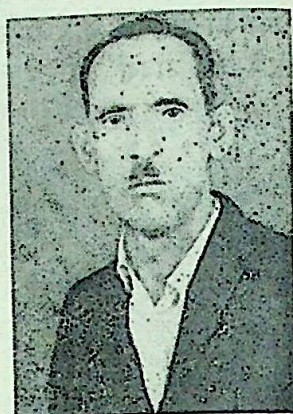


श्री यादव जी स्वतंत्रता संग्राम में कब पीछे रहने वाले थे ।
आपने आजादी की लड़ाई लड़ने का व्रत धारण किया । सन ४१ में
६ माह की सजा तथा ५०) का दण्ड न देने पर ३ माह की और
सजा काटी ।



[६५]

१. नाम-श्री ठा. सन्तोषसिंह
२. पिता का नाम- श्री पृथ्वीसिंह
३. स्थान पता-गोना
४. जन्म- ७/१२/१९२० ई०
५. वर्तमान आयु- ५२ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१ में ६ माह
१००) जुर्माना
७. अन्य विवरण—



ठाकुर संतोषसिंह का राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्तर्गत गोना कार्यक्षेत्र रहा है। जहाँ उन्होंने जन-जागरण का काम किया। १९४१ में व्यक्तिगत आन्दोलन में ६ माह का कारावास भोगा। आज भी देश भक्ति में डटे हुये हैं।

✱

१. नाम- श्री श्यामलाल गुप्ता
२. पिता का नाम- श्री मूलचन्द गुप्ता
३. स्थान / पता- बांसी
४. जन्म- १९१२ ई०
५. वर्तमान आयु- ६० वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष-१९३२ में ६ माह
५०) दण्ड
७. अन्य विवरण—



बांसी (ललितपुर) के प्रसिद्ध राष्ट्रीय आन्दोलनकारी श्री श्यामलाल गुप्ता को सत्याग्रह व जुलूम आदि के संदर्भ में ६ माह का कारावास व ५०) ६० जुर्माना हुआ। अपने क्षेत्र के आप एक सुयोग्य एवं कर्मठ नेता रहे हैं और आज तक समाज सेवा में रत हैं।

[६६]

१. नाम-श्री भगवानदास ज्योतिषी
२. पिता का नाम-श्री खुन्नीलाल
३. स्थान / पता-कैलगांव
४. जन्म-१९१७ ई०
५. वर्तमान आयु-५५ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष-१९४२ में १ वर्ष
१००) जुर्माना
७. अन्य विवरण—



श्री भगवानदास ज्योतिषी कैलगांव, महरोनी (ललितपुर) के अच्छे आन्दोलनकारी रहे हैं। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में १ वर्ष की सजा आपको मिली।

देशी रियासतों में जन-जागृति के लिये समय २ पर होने वाले सत्याग्रह में भाग लिया, इस पर इनको राज्य टीकमगढ़ में गिरफ्तार किया व यातनायें दी गई।

१. नाम-श्री पं. फूलचन्द जी
- सिद्धांत-शास्त्री, सिंघई
२. पिता का नाम-श्री दरयावलाल
३. स्थान / पता-सिलावन
४. जन्म-वैसाख बदी ४ सं. १९५७
५. वर्तमान आयु ७२ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष १ मई १९४१
७. अन्य विवरण—



आपका कार्य क्षेत्र मुख्यतः मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र रहा। बीना में सन् २८ से ३२ तक कांग्रेस के सक्रिय सदस्य तथा महाराष्ट्र

[६७]

शोलापुर में सन् ३४ से ३८ तक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सक्रिय सदस्य रहे, म प्र अमरावती में सन् ४०-४१ में उप मंत्री नगर कांग्रेस कमेटी के रहे। राजनीति-सक्रियता को पूर्तरूप दिया सन् ४१ के व्यक्ति गन सत्याग्रह में लड़वारी (बार) में ओजस्वी भाषण देने के कारण ललितपुर कचहरी के अहाते में १ माह की सजा तथा १००) जुर्माना का दण्ड दिया गया। सन् १९३० से खादी ग्रहण की। वर्तमान में अध्यापन, विविध संस्कृत-प्राकृत के ग्रन्थों का राष्ट्र-भाषा में रूपान्तर करके आजीवका चला रहे हैं !



१. नाम—श्री दलू उर्फ खुमान सरू

२. पिता का नाम—श्री सरू

३. स्थान—बंट

४. जन्म—१९११ ई०

५. वर्तमान आयु—६१ वर्ष

६. जेल-यात्रा वर्ष—१९३३ ६ माह
३०) दरद झांसी में

७. अन्य विवरण—



बंट (ललितपुर) के हिम्मत वाले गजब के आन्दोलन कर्त्ता रहे हैं।

सन् १९३३ में वुन्देल खण्ड कान्फ्रेन्स झांसी में सत्याग्रह करते हुऐ गिरफ्तार हुऐ। पुलिस की क्रूर यातनाओं के शिकार रहे। अपने क्षेत्र के प्रमुख किसान कार्य कर्त्ता के रूप में आज भी देश सेवा में संलग्न हैं।



[६८]

१. नाम—श्री सुदामाप्रसाद गोस्वामी
२. पिता का नाम—श्री रामेश्वरप्रसाद गोस्वामी
३. स्थान—तालवेहट
४. जन्म—१९१७ ई०
५. वर्तमान आयु—५५ वर्ष
६. जेलयात्रा—१९४२ में १ वर्ष
७. अन्य विवरण—

बुन्देल खण्ड के शीर्षस्थ नेताओं में प्रमुख अन्तः मन से गांधी विचार धारा के अनुयायी श्री गोस्वामी जी अनेक संस्थाओं के संस्थापक हैं। मिलनसार तथा समाज सेवा को अपना ध्येय बनाकर चलने वाले इस तपस्वी को जनता ने सदैव सम्मान देकर उनकी सेवाओं को सराहा है। आप उत्तर प्रदेश विधान सभा में लगातार १५ वर्षों से एम. एल. ए. के रूप में जन प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। अन्याय से सदैव जूझने वाले गोस्वामी जी अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य रहे हैं। झांसी जिला में संगठन कांग्रेस का अस्तित्व अगर है तो इसका एक मात्र श्रेष्ठ श्री गोस्वामी जी को है। स्वतंत्रता सेनानियों की पंक्ति में आप १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में खड़े हो गए, फलतः १ वर्ष का कारावास भोगना पड़ा बुन्देल खण्ड के विकास में आपके योगदान को सदैव चिर स्मरणीय रखा जावेगा।

तालवेहट में श्री मर्दनसिंह इन्टर कालेज स्थापित कर आपने अपने क्षेत्र में शिक्षा के विकास का स्तुत्य कार्य किया। आप उसके संस्थापक मन्त्री रहे।



[६६]

१. नाम-श्री अभिनंदनकुमार टडैया
२. पिता का नाम-श्री पं.नालाल टडैया
३. स्थान पता-ललितपुर
४. जन्म तिथि-अज्ञात
५. वत मान आयु-५२ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष-१९४२ में १ वर्ष
तथा १००) अर्थ-दण्ड
७. अन्य विवरण

आप श्री टडैया जी आज ललितपुर-झाँसी के प्रसिद्ध वकील हैं । सही जिन्दगी की तलाश में और सत्य की खोज में सदैव रत रहते हैं । १९४२ के राष्ट्रव्यापी जन-आन्दोलन में सम्मिलित होना आपके लिये जैसे अपरिहार्य था कि जिसकी वजह से भारत प्रति रक्षा कानून की ३८ वीं धारा के अन्तर्गत ३ अगस्त सन् १९४२ ई० को १ वर्ष की सरल कैद हुई एवं १०० रुपये जुर्माने की सजा पायी । देश के प्रति प्यार टडैया जी में कूट कूट-कर भरा हुआ है ।

आज आप जिले के प्रसिद्ध वकीलों में से हैं । आपका जीवन सादा है । आप कई संस्थाओं की प्रगति से जुड़े हुये हैं ।

[७०]

- १- नाम-कामरेड चन्दनसिंह
- २- पिता का नाम-श्री रामप्रसाद
- ३- स्थान / पता-जखौरा
- ४- जन्म-२-१२-१९१२ ई०
- ५- वर्तमान आयु-६० वर्ष
- ६- जेल यात्रा वर्ष-१९३० में १ वर्ष, १९३२ में ६ माह, १९४३ में ३ माह

७- अन्य विवरण-

स्वभाव से सरल वाणी में ओज शरीर से दुबले किन्तु दधीच की भांति मजबूत शरीर रखने वाले, कामरेड आजादी का विगुल वजाने वालों में अग्रणी रहे हैं। सन १९३० में नमक सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। १ वर्ष की कठिन सजा पाने के उपरान्त सन १९३२ में अंग्रेजी सरकार की जालिमाना हरकतों से जूझने पर ६ माह की सजा पाई, दो बार सजा पाने के बाद भी कामरेड को चैन नहीं मिला। एक मात्र ध्येय अंग्रेजी हुकूमत को जड़ से उखाड़ फेंकना था और भारत छोड़ो आन्दोलन में पुनः ३ माह की कैद हुई। यह लौह पुरुष सतत संघर्षशील रहा। आपने अपनी त्याग तपस्या की डिग्री को कभी भुनाने की नहीं सोची। आजाद भारत होने पर आप कांग्रेस नेताओं से मत-भेद के कारण साम्यवादी दल में प्रविष्ट हुये क्योंकि आपके दिल में गरीब किसानों-मजदूरों के प्रति दर्द रहा है। उत्तर प्रदेश में साम्यवादी दल के प्रभावशाली नक्षत्रों में आपका प्रकाश आलोकित है, समय समय पर आप मजदूरों, गरीब किसानों के हितार्थ ही नहीं, मंहगाई-भ्रष्टाचार के विरुद्ध आन्दोलन में सक्रिय योग देते हैं। आन्दोलनों का नेतृत्व उसी भावना से करते हैं जिस भावना से अंग्रेजों की जालिमाना हरकतों को मिटाने के लिये किया करते थे। स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं में चिर स्मरणीय भूमिका निभाने पर आधुनिक पीढ़ी कृतज्ञ है।

‘जिन्हें नाज जिस पर हो, करते रहें वो
हमें नाज है इन रण-वांकुरों पर’



[७१]

१. नाम—श्री ताराचन्द कजिया वाले
२. पिता का नाम—श्री रामचन्द्र
३. स्थान पता—ललितपुर
४. जन्म—१६२० ई०
५. वर्तमान आयु—५२ वर्ष
६. जेल-यात्रा-१६४२ में १ वर्ष (१००) जुर्माना
७. अन्य विवरण—

सन् ४२ में दत्ता १४४ को तोड़कर जुलूस निकाला, फलस्वरूप उपरोक्त दण्ड मिला और नैनी सेन्ट्रल जेल में रहना पड़ा। राष्ट्रीय आन्दोलन में हर संभव प्रयत्न से देशभक्ति में अनुरक्त रहे।

★

१. नाम—श्री भावसिंह
२. पिता का नाम—श्री तिजू प्यारे
३. स्थान / पता—सुनारी (तालबेहट)
४. जन्म तिथि अज्ञात
५. वर्तमान आयु—ज्ञात नहीं
६. जेल-यात्रा-वर्ष-२२-४-४१ में
१ माह, ५०) जुर्माना
७. अन्य विवरण—

ग्राम में जन्में श्री भावसिंह भी देश में चल रही स्वाधीनता की लहर से अछूते नहीं रहे। आपको सन् ४१ में १ माह की सजा तथा ५० रुपया जुर्माना न देने पर २ माह की सजा हुई!

★

[७२]

१. नाम—श्री रामजीलाल भार्गव
२. पिता का नाम—श्री जगन्नाथ
३. स्थान / पता—तालबेहट
४. जन्म—१९१८ ई०
५. वर्तमान आयु—५५ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष—१९४१ में ३ माह
७. अन्य विवरण—

स्थानीय नेताओं के साथ आन्दोलनों में भाग लेने पर आपको सन् ४१ में ३ माह का कारावास हुआ.

✱

१. नाम—श्री रामरतन गोस्वामी
२. पिता का नाम—श्री पं० रामनाथ गोस्वामी
३. स्थान / पता—तालबेहट
४. जन्म—१९१२ ई०
५. वर्तमान आयु—६० वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष—१९४१ में ६ माह ५०) दंड
७. अन्य विवरण -

गांधीवादी विचार-धारा से ओत-प्रोत गोस्वामी जी ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय योग दिया। फलतः ब्रिटिश सरकार के दरिन्दों ने आजादी के इस योद्धा को सन् ४१ में ६ माह की सजा तथा ५० रुपये का आर्थिक दण्ड दिया। जन्म-भूमि आज तक इस राजनीति के सक्रिय कार्य-कर्ता को आदर एवं सम्मान प्रगट करने में गौरव की अनुभूति करती है !

✱

[७३]

१. नाम—श्री जगन्नाथ लोदी
२. पिता का नाम—श्री चित्तरसिंह
३. स्थान पता—सतबसा (सादूमल)
४. जन्म—१९०८ ई०
५. वर्तमान आयु—६४ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष—१९४१ में ६ माह
७. अन्य विवरण—

सतबासा (ललितपुर) के राष्ट्रीय आन्दोलन का सूत्र-पात करने वालों में आप अग्रणी रहे हैं ।

१. नाम—श्री प्यारेलाल फूलमाली
२. पिता का नाम—हजारीलाल
३. स्थान / पता—सैदपुर
४. जन्म—अप्रैल १९१३ ई०
५. वर्तमान आयु—५६ वर्ष
६. जेल यात्रा अवधि—३।४।४१ में १॥ साल सजा २५) दण्ड
७. अन्य विवरण—

श्री फूलमाली ने स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं को सहयोग प्रदान किया, स्वयं भी आन्दोलन में कूद पड़े । फलतः सन् ४१ में १½ साल की सजा २५ रुपयों का दण्ड हुआ,



[७४]

६. नाम-श्री चिन्तामणि बाढ़ई
२. पिता का नाम-श्री उमराव
३. स्थान / पता- सैदपुर
४. जन्म-तिथि अज्ञात
३. वर्तमान आयु- ५१ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४९ में २ माह का कठोर
कारावास और ३०) अर्थ दण्ड
७. अन्य विवरण —

आप राष्ट्र भक्त सैदपुर के अच्छे जन-आन्दोलनकारी रहे हैं।



१. नाम-श्री शंकरसिंह लोधी
२. पिता का नाम-श्री कारे
३. स्थान / पता-सैदपुर
४. जन्म-जनवरी १९०१ ई०
५. वर्तमान आयु-७१ वर्ष
६. जेल-यात्रा वर्ष-१९४१ में ५ माह की सजा
५०) जुर्माना
७. अन्य विवरण —

गांव में आजादी के अग्रणी होने पर आपकी प्रेरणा से सैदपुर अंग्रेजी सरकार के प्रति विद्रोह का गढ़ बन गया। फलतः आपको सन् ४१ में ५ माह की सजा एवं ५०) जुर्माना हुआ राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत इस युवक पर गांव वाले गर्वित हैं।



[७५]

१. नाम—श्री लालसिंह लोधी.
२. पिता का नाम—श्री महीपसिंह
३. स्थान पता—सैदपुर
४. जन्म—मई १९०८ ई०
५. वर्तमान आयु—६४ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष १९४१ ६ माह ३०) सैदपुर
से गिरफ्तार

७. अन्य विवरण—

गांव में स्वतंत्रता की चिनगारी फूटने पर सन १९४१ में १ माह की सजा तथा ५० रु० का आर्थिक दण्ड हुआ। अलख जगाने शासन विरोधी गतिविधियों के कारण सैदपुर में ही गिरफ्तार हुए।

१. नाम—श्री जयराम सेहारे
२. पिता का नाम—श्री कन्हैयालाल
३. स्थान / पता—बानपुर
४. जन्म—१९२०
५. वर्तमान आयु—५२
६. जेल यात्रा वर्ष—१९४२
७. अन्य विवरण—

क्रान्तिकारियों के अग्रज महाराजा मर्दनसिंह की भूमि बानपुर में जन्मे जयराम सेहारे ने भी क्रान्ति का विगुल बंजा दिया था। जहां का कण कण क्रान्ती की कहानी कहता है, भला ऐसी त्याग भूमि शीघ्र गाथा क्यों न प्रेरक बनती। श्री सेहारे का पौरुष मचल उठा अंग्रेज सरकार से संघर्ष करने में २२ वर्ष की युवावस्था में सन् ४२ में १ वर्ष की सजा तथा १०० रुपयों का अर्थ दण्ड हुआ। आपने जो देश भक्ति का परिचय दिया वह अनुकरणीय है।

[७६]

१. नाम—श्री मंगलसिंह कठरिया
२. पिता का नाम—श्री निहालसिंह
३. स्थान / पता—बानपुर
४. जन्म—अगस्त १९०० ई०
५. वर्तमान आयु—७२ वर्ष
६. जेल यात्रा वर्ष—१९४२ में एक वर्ष
- ७ अन्य विवरण—

श्री मंगलसिंह जी का कार्य क्षेत्र केवल बानपुर ही नहीं अपितु महारौनी भी रहा है। १९३५ से ही आप राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं। श्री रामेश्वरप्रसाद शर्मा के नेतृत्व में सन् ३६ से संगठन कार्य किया और उन्हीं दिवसों आप मण्डल-कांग्रेस-कमेटी के अंदाक्ष भी रहे। घुलेकर जी के चुनाव के हेतु आपने विशेष श्रम किया और उत्तरदायी शासन के हेतु टीकमगढ़ महाराज से संघर्ष किया। कई बार जिला कांग्रेस कमेटी झांसी के सदस्य बने। सन् १९४२ के आन्दोलन में भाग लेने के कारण एक वर्ष का कारावास भी भोगा। आप कांग्रेस के अच्छे कार्यकर्ताओं में से रहे हैं।

[७७]

१. नाम—श्री प्रो० खुशालचंदजी एम. ए.

साहित्याचार्य

२. पिता का नाम—श्री गोरावालाजी

३. स्थान / पता—गोरा (मंडावरा)

४. जन्म—१९१३ ई०

५. वर्तमान आयु—५६ वर्ष

६. जेल—यात्रा वर्ष—१९४१, १९४२

७. अन्य विवरण—

अपने पूर्वज चिन्तामणी शाह एवं उमराव शाह की भांति आपने श्री अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का सदैव के लिये अन्त करने के लिये १९३० से ही बानर सेना के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। सन १९३४ में एक साथ एम. ए. (काशी विश्व विद्यालय) तथा आचार्य (संस्कृत विश्वविद्यालय) की परीक्षाएं पास कीं तीसरे व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय उत्तर प्रदेश कांग्रेस के संगठन मंत्री थे २॥ मास तक हैलटशाही से जूझते हुए २५ जुलाई ४१ को नजर बन्द हुए। फरवरी ४२ में जेल से छूटने के बाद भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने पर पुनः जेल का पंछी जेल में ३ सितम्बर ४२ को भेज दिया गया। ३१-१२-४४ तक सजा भोगने के उपरान्त आप स्वतन्त्र भारत में साहित्य-जगत में अपना विविष्ट स्थान रखते हैं। प्रो० गोरावाला, संस्कृत, प्राकृत—साहित्य तथा दर्शन, धर्म और इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

[७८]

१. नाम— श्री गौरेलाल चौरसिया
२. पिता का नाम— श्री दूढ़े चौरसिया
३. स्थान / पता— पाली
४. जन्म-१९४१ ई०
५. वर्तमान आयु-६८ वर्ष
६. जेल-यात्रा-१९४१ में ६ माह
७. अन्य विवरण—

क्रान्ति कारियों की सहायता करके आनन्द विभोर होने वाले चौरसिया जी को भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत ६ माह का कठोर कारावास सन् १९४१ में हुआ। आपने यथा शक्ति क्रान्तिकारियों की मदद की। और आज तक आप कांग्रेस के द्वारा देश सेवा में लीन है।



१. नाम-श्री जालम यादव
२. पिता का नाम-श्री बलदेव
३. स्थान पता-कपासी (धौरी)
४. जन्म-१९२२ ई०
५. वर्तमान आयु-५० वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४२
७. अन्य विवरण—

२० वर्ष की आयु में ही आजादी का दीवानी अंग्रेज सरकार के विरोध खड़ा हो गया। सन् १९४२ में ललितपुर में जल विहार के मेले में दफा १४४ तोड़ने में चालान होने पर १ वर्ष की कठोर सजा हुई।



[७६]

१. नाम-श्री राजधर स्वर्णकार
२. पिता का नाम-श्री देवी
३. स्थान / पता-सिन्दवाहा
४. जन्म-ज्ञात नहीं
५. वर्तमान आयु-ज्ञात नहीं
६. जेल-यात्रा वर्ष-१९४१
७. अन्य विवरण—

सन ४१ में अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद छेड़ने पर आपको ६ माह की सजा हुई ।

१. नाम-श्री रामदयाल गेंडा
२. पिता का नाम-श्री जगन
३. स्थान पता-धरोदा डांग (बार)
४. जन्म—सावन सुदी ५ सं० १९३५
५. वर्तमान आयु-७६ वर्ष
६. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१ में ३ माह की सजा,
६००) जुर्माना
७. अन्य विवरण—

स्वतंत्रता संग्राम में अपनी आहुति देने पर सन ४१ में ३ माह की सजा तथा १०० रुपया जुर्माना का दण्ड स्वीकार किया लेकिन इतने पर भी मन को चैन वहीं मिला, नेताओं के आवाहन पर अंग्रेजों को बाहर खदेड़ने के सिलसिले में व्यक्तिगत सत्याग्रह में सन ४१-४२ में पुनः दफा १०६ के अंतर्गत १ वर्ष की सजा काटी ।



श्री जगन्नाथ
सैदपुर



श्री ताराचन्द जैन
ललितपुर

जिनका विवरण प्राप्त नहीं हुआ



स्वर्गीय-
श्री कन्हैयालाल फूलमाली
पाली



स्वर्गीय-
श्री नारायणदास खरे
कैलवारा

स्मृ

ति

शे

ष

५३

५३

५३

५३

५३

[८४]

१. नाम—स्वर्गीय श्री रामदास दुवे
२. पिता का नाम—श्री हरदास दुवे
३. स्थान / पता—बांसी ललितपुर
४. जेल यात्रा वर्ष—१९३० में ६ माह, ३२
में ६ माह २ बार, ४० में १ वर्ष, ४३ में
१ वर्ष
५. अन्य विवरण—

स्वतंत्रता-संग्राम के सेनानियों का स्मरण कर जिन योद्धाओं पर बांसी एवं ललितपुर नगर गर्वित होता है उनमें दुवेजी का नाम अप्रगण्य है। आप कांग्रेस के जीवन पर्यन्त कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे। निर्भीक निडर साहसी श्री दुवेजी अंग्रेजों की क्रूरता का अनेकों बार शिकार हुए किन्तु अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये दमन चक्र से संघर्ष लेते रहे अनेकों बार आन्दोलनों का नेतृत्व करने वाले इस अमर सेनानी ने सन १९३० में ६ माह सन ३२ में ६ माह, सन ४० में १ वर्ष तथा ४३ में १ वर्ष जेल में रहकर आने वाली पीढ़ी को जो त्याग, तपस्या का मार्गदर्शन कराया उसे सदैव याद किया जायगा। ★

१. नाम—श्री राजधर
२. पिता का नाम—श्री जनतराम
३. स्थान पता—आखिलोन
४. जन्म-तिथि अज्ञात
५. जेल-यात्रा-वर्ष-सन ४२ में ११
माह की सजा
६. अन्य विवरण—



ग्रामीण क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्त्ता के रूप में आन्दोलन में भाग लेकर सन ४० में ११ माह की सजा काटकर देश को आजाद कराने में जो योग दिया वह सदैव स्मरणनीय रहेगा। ●

[८५]

- १- नाम-श्री कुन्दनलाल मलैया
- २- पिता का नाम-श्री मोहनलाल मलैया
- ३- स्थान पता-सादूमर
- ४- जेल यात्रा वर्ष-सन १९४१ में
६ माह १००) अर्थ दण्ड, ४२
में १ वर्ष १००) आर्थिक दण्ड
- ५- अन्य विवरण—



कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री मलैयाजी उन सपूतों में अग्रणी है जिन्होंने देश को आजाद कराने में अपना तन, मन, धन, होम दिया। गांधी विचार धारा के प्रतीक इस स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी ने शारीरिक यातनाओं के साथ आर्थिक क्षति भी देश को आजाद कराने में उठाना स्वीकार की।



१. नाम-श्री भूपतराम
२. पिता का नाम-श्री जालम
३. स्थान / पता-बानपुर
४. जेल-यात्रा वर्ष-१९४२ में १ वर्ष
१००) जुर्माना
५. अन्य विवरण —



गांधीवादी विचार-धारा के अनुयायी इस स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी ने सन ४३ के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर १ वर्ष की सजा तथा १०० रुपये का दण्ड देश हितार्थ भोगकर अपना नाम आने वालो पीढ़ियों के स्मरण योग्य बना दिया।



[८६]

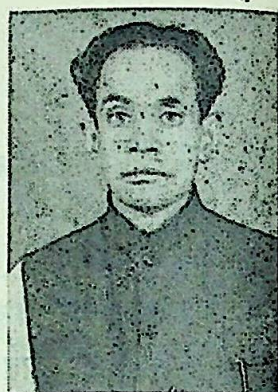
१. नाम-श्री शिवप्रसाद जैन
२. पिता का नाम-
श्री उदयजीत
३. स्थान / पता- जाखलौन
४. जन्म-तिथि अज्ञात
५. जेल-यात्रा-वर्ष-
सन ४२ में ६ माह
नजर बन्द
६. अन्य विवरण —



स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने वालों में श्री शिवप्रसाद जी कर्मठ कार्यकर्त्ता थे । सन ४२ में आप ६ माह तक नजर बन्द रहे असामाजिक तत्वों द्वारा आप मारे गये ।

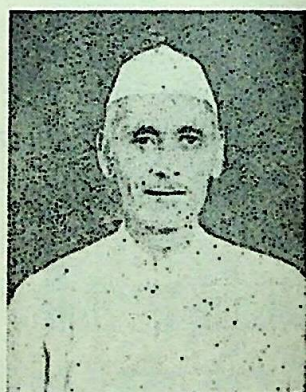
[८७]

१. नाम—श्री चुन्नीलाल चौरसिया
२. पिता का नाम—श्री मोटेराम चौरसिया
३. स्थान / पता—पाली
४. जन्म—२० अक्टूबर १९१४ ई०
५. जेल—यात्रा वर्ष—१९३०, में २ माह १९४१ में ६ माह
६. अन्य विवरण—



सन् १९३० से ४२ तक आप राष्ट्रीय कांग्रेस के आन्दोलनों आदि में भाग लेते रहे। ग्राम खमराकला में जन जागरण के लिये अथक परिश्रम किया। बलात् ईसाई बनाये जा रहे हिन्दुओं की रक्षा की। ग्राम पाली में जन-आन्दोलन का नेतृत्व किया। जमींदारी आतंकवाद से सदैव संघर्ष किया। किसान, मजदूरों के सच्चे हितैषी तेरह मार्च तेहत्तर को मोटर दुर्घटना में स्वर्गवासी हो गए।

१. नाम—श्री मोनीलाल टडैया
२. पिता का नाम—श्री गिरधारीलाल
३. स्थान / पता—ललितपुर
४. जेल यात्रा वर्ष—१९४२ में १ वर्ष का कठोर कारावास (१००) का आर्थिक दण्ड
५. अन्य विवरण—



साहूकार परिवार में जन्मने वाले श्री टडैया को अर्थ संयम की भावना ने ग्रसित नहीं किया, आप कांग्रेस के कर्मठ कार्य-कर्त्ता के रूप में जाने जाते थे। देश हितार्थ आन्दोलनों में आगे रहे। ४२ के आन्दोलन में आपको १ वर्ष की कठोर यातनाएं दी गई साथ ही (१००) रुपये का आर्थिक दण्ड भी।

[८८]

१. नाम-श्री दुलीचन्द जैन
२. पिता का नाम-श्री मल्हूराम
३. स्थान / पता-तालबेहट
४. जेल-यात्रा-वर्ष - १९४१ में ६ माह की सजा
५. अन्य विवरण—

क्षेत्रीय नेताओं के साथ आन्दोलन में भाग लेकर भारत आजाद कराने में अपना योग दिया । ४१ में ६ माह की सजा काटकर जैन समाज को इस पवित्र महायज्ञ में अहुति देने की प्रेरणा दी ।

१. नाम-श्री भूपतराम
२. पिता का नाम-श्रीजालम
३. स्थान / पता-वानपुर
४. जन्म-१९११ ई०
५. जेल यात्रा वर्ष-१९४२
६. अन्य विवरण-

श्री भूपतराम वानपुर वासी का प्रमुख कार्य-क्षेत्र रियासतों में जन जागरण करना ही था । सन् १९३५ में आप राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुये पुलिस की पिटाई से घायल हुये, पर अपने आन्दोलन में लगे रहे । तिरंगा झंडा उदयपुरा के डाकबगले में फहराया व जार्ज पंचम का चित्र जलाया । सन् ४२ में महरोली में आन्दोलन छेड़ा और मार खाई ।



[८६]

१. नाम—श्री प्यारेलाल यादव
२. पिता का नाम—अज्ञात
३. स्थान पता—भारकौन
४. जन्म तिथी—अज्ञात
५. जेल-यात्रा-वर्ष १९३०, ३२ में ६, ६ माह
की सजा
६. अन्य विवरण—

कल्याण-पुरा क्षेत्र के ग्रामों में अत्याधिक लोक-प्रिय श्री यादव जी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेते रहे जीवन पर्यन्त कांग्रेस पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ता रहे ।

१. नाम—श्री ठाकुर विशेश्वरसिंह
२. स्थान / पता—तालवेहट
३. जेल यात्रा वर्ष—१९३०, ३२ में जेल यात्रायें

आप राष्ट्रीय विचारधारा के निर्भीक सेनानी रहे ।

[६०]

१. नाम—श्री डा. बसन्तलाल मिश्रा
२. स्थान पता—तालवेहट
३. जेल यात्रा वर्ष—१९३०, ३२ में ६. ६ माह की जेल
४. अन्य विवरण—

क्रान्ति का गढ़ खनियांघाना आपके कार्य संचालन का प्रमुख केन्द्र था । निर्भीक नेता के रूप में देखकर अंग्रेजों ने इस सेनानी को दो बार जेल में डालकर यातनायें दीं ।



१. नाम— श्री तेजसिंह
२. पिता का नाम—श्री पहाड़सिंह
३. स्थान / पता—सैदपुर
४. जेल-यात्रा-१९४२ में सजा १ माह व ५०) का अर्थ दण्ड
५. अन्य विवरण—

आपने क्षेत्रीय नेताओं के साथ आन्दोलन में भाग लिया सन ४२ में १ माह की सजा काटी तथा ५० रुपये का आर्थिक दण्ड भोगा इस प्रकार आपने देश को आजाद कराने में अपना योग देकर नाम अमर कर लिया ।



[६१]

१. नाम-श्री अनन्दी
२. पिता का नाम-श्री चिन्दे
३. स्थान पता-बानपुर
४. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४२ में १ वर्ष १००)
५. अन्य विवरण—

किसान कार्यकर्ता के रूप में क्षेत्रीय जनता के मार्ग दर्शक श्री अनन्दी ने सन ४२ के आन्दोलन में १ वर्ष की सजा काटी तथा १०० का आर्थिक दण्ड भोगा ।



१. नाम-श्री दुग्जन
२. पिता का नाम-श्री हीरालाल वैश्य
३. स्थान / पता-भावनी
४. जेल यात्रा वर्ष-१९४१ में १ माह की सजा
५०) दण्ड
५. अन्य विवरण -

अपने गांव का एक मात्र प्रतिनिधित्व करने वाले इस सपूत ने दिखा दिया कि हम आजादी चाहते हैं । आजादी की खातिर जेल जाना स्वीकार किया तथा आर्थिक दण्ड भोग कर तन, मन, धन से योगदान किया ।



[६२]

१. नाम—श्री मौजीलाल
२. पिता का नाम—श्री ठकरे सहारया
३. स्थान / पता—बार
४. जेल-यात्रा वर्ष—१९४१ में ३ माह १५ दिन
५. अन्य विवरण—

आपने अत्यन्त निधन जाति रावत सहारिया का नेतृत्व करके आन्दोलन का संचालन किया । ३ माह १५ दिन की जेल यात्रा की ।

१. नाम—श्री नारायणदाम तिवारी
२. पिता का नाम—श्री रघुनाथ तिवारी
३. स्थान पता—बार
४. जेल-यात्रा-वर्ष—१९३० में ६ माह ३२ में
६ माह, ४१ में १८ माह
५. अन्य विवरण—

आपकी संगठन शक्ति अभूत-पूर्व थी । अंग्रेजों की आँख की किरकिरी रहे । बाणी में ओज इतना कि एक बार जिसने भी भाषण सुना उसने आहुति देने की ठान ली अंग्रेजों से संघर्ष करने में आपको आनन्द की अनुभूति होती थी । क्षेत्रीय जनता अपना हृदय सम्राट मानती थी ।

[६३]

१. नाम-श्री बाबूलाल माली शहीद
२. पिता का नाम-श्री ग्याप्रसाद
३. स्थान / पता-ललितपुर
४. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४२ में १ वर्ष की कठोर सजा तथा ५ वेंत की पिटाई
५. अन्य विवरण—

इस साहसी सेनानी को क्रूर न्यायाधीशों ने १ वर्ष की कठोर सजा देने पर भी ५ वेंत की सजा देकर न्याय प्रियताका गला घोंटा । फांसी से भी जघन्य कार्य वेंत मार कर आपके प्राण लिये गये । आज भी हम उनके स्मारक पर अपनी मौन श्रद्धान्जलि अर्पित करने में गर्व का अनुभव करते हैं ।

१. नाम-किशोरसिंह
२. स्थान-जखौरा
३. जेल यात्रा-सन् १९४२
५. अन्य विवरण—

राष्ट्रीय विचार धारा के अनुयायी श्री किशोरसिंह ने स्थानीय नेताओं के साथ आन्दोलन में सन् ४९ में जेल यात्रा करके देश की आजादी में अपना योगदान दिया ।

[६४]

१. नाम—श्री डालचन्द जैन
२. पिता का नाम—श्री ठाकुरदास जैन
३. स्थान पता—मंडावरा ललितपुर
४. जेल-यात्रा वर्ष—१९४२ में १ वर्ष की कठोर सजा
५. अन्य विवरण—

घन्य है वह जननी जिसने देश के लिए ऐसा रत्न दिया जिसकी ज्योति ने सेनानियों को मार्गदर्शन दिया। अर्थाभाव के कारण स्वयं जीविकोपार्जन में तिल तिल आहुती देती रहीं और पुत्र को सदैव देश पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा में गति देती रहीं। यह त्याग, तपस्वनी खाड़ला सपूत भी सिंह की तरह निकला और अंग्रेजों के दांत खट्टे करता रहा। समाज वादी विचार धारा का यह निष्ठावान कार्यकर्त्ता अपना धुन का पक्का था इसको किसी, भय, आतंक ने विचलित नहीं होने दिया। करो या मरो की एक मात्र भावना के वशीभूत होकर कार्य करने वाले डालचन्द ने अपने कार्य, त्याग-तपस्या का कभी भी फल नहीं चाहा। लेकिन हम इस वीर सेनानी को प्रातः स्मरण करके अपने आप को घन्य समझते रहेंगे।

✱

१. नाम-श्री बैजनाथ स्वर्णकार
२. पिता का नाम-श्री तुलसीराम
३. स्थान पता-ललितपुर
४. जेल यात्रा वर्ष-१९३० में ६ माह की कठोर सजा

५. अन्य विवरण—

अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाने वालों में आप अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर अमर हो गये।

[६५]

१. नाम-श्री हल्के काछी
२. पिता का नाम-श्री उमगाव
३. स्थान पता-बट
४. जेल-यात्रा-वर्ष-१९३२ में ३ माह, ३३ में ६ माह
५. अन्य विवरण—

अपने समय के प्रसिद्ध ग्रामीण कार्य-कर्ता रहे । अंग्रेजों से संघर्षरत रहने पर उनकी जालिमाना हरकतों के खिलाफ आवाज उठाने पर आपने दो बार जेल जाकर ९ माह सजा काटी । गांव वाले इस आहुति देता को सदैव अपने अन्तःकरण में संजोये हुये नमस्तक हाते रहेंगे ।

✽

१. नाम-श्री अजुध्याप्रसाद सेहारे
२. पिता का नाम-श्री परमानन्द
३. स्थान / पता-बानपुर
४. जेल-यात्रा वर्ष-१९४२ में १ वर्ष की सजा १०० का आर्थिक दण्ड
५. अन्य विवरण—

किसान कार्यकर्ता के रूप में सन ४२ के आन्दोलन में आपने १ वर्ष की सजा काटी तथा १०० रुपये का आर्थिक दण्ड भोगा ।

[६६]

१. नाम—श्री मरदन यादव
२. पिता का नाम—श्री सुकू
३. स्थान पता बानपुर
४. जेल यात्रा वर्ष—१९४२ में १ वर्ष १००
रुपया आर्थिक दण्ड

५. अन्य विवरण—

किसान कार्यकर्ता के रूप में सन ४२ के आन्दोलन में अपने साथियों के साथ १ वर्ष की सजा तथा १०० रुपये का आर्थिक दण्ड स्वीकार किया ।

★

१. नाम—श्री ग्याप्रसाद
२. पिता का नाम—श्री जालम
३. स्थान पता—बानपुर
४. जेल यात्रा वर्ष—१९४२ में १ वर्ष की सजा
तथा १००) का अर्थ दण्ड

५. अन्य विवरण—

श्री ग्याप्रसाद भी उन सेनानियोंमें हैं जिन्होंने देश को आजाद कराने में यातनायें सहीं । सन ४२ के आन्दोलन में १ वर्ष की सजा एवं १००) का आर्थिक दण्ड स्वीकार कर जो योग दिया उसको हम सदैव स्मरण करते रहेंगे ।

★

[६७]

१. नाम-श्री गोविन्ददास विनीत
२. स्थान पता-तालवेहट
३. जेल यात्रा वर्ष-१९३० में ६ माह की सजा
४. अन्य विवरण—

अपने समय के प्रसिद्ध साहित्यकार रहे । राष्ट्रीय रचनाओं, द्वारा जन-जागरण का कार्य किया । अनेक कृतियों के द्वारा आपने हिन्दी की सेवा की । राष्ट्र के नेताओं के आवाहन पर १९३० में जेल जाकर ४ माह की सजा काटी । अब भी हमें इस योद्धा की रचनायें पढ़कर प्रेरणा मिलती है ।

१. नाम-श्री राजाराम पाण्डे
२. पिता का नाम-श्री बंशीधर
३. स्थान पता-महरोनी
४. जेल यात्रा वर्ष-सन ४२ में १ वर्ष का कठोर कारावास (१००) रु० का अर्थ दण्ड
५. अन्य विवरण —

आप निर्भीक कार्य-कर्ता रहे । ११० का मुकदमा कैदी की हैसियत से लड़े, स्वयं पैरोकारी की और छूटे । लेकिन छूटना उनका अंग्रेजों से पुनः मोर्चा लेने के लिये था सन् ४२ के आन्दोलन में कूद पड़े और १ वर्ष का कठोर कारावास यातनाओं सहित तथा १०० रुपये का दण्ड भोगा । आपकी निडरता, एवं सेवा की सदैव सराहना की जाती रहेगी ।

[६८]

- १- नाम-श्री कामताप्रसाद
- २- पिता का नाम-श्री बदली यादव
- ३- स्थान पता-गेंदोरा, बार
- ४- जेल यात्रा वर्ष-१९४१ में १ माह की सजा
तथा ५० रु० का दण्ड
- ५- अन्य विवरण-

श्री यादव जी ने स्वतंत्रता संग्राम में १ माह की सजा काटकर
तथा ५० रुपयों का आर्थिक दण्ड देकर योग दिया ।



१. नाम-श्री प्यारेलाल यादव
२. पिता का नाम-श्री अजुही
३. स्थान / पता-बार
४. जेल-यात्रा वर्ष-सन ४१ में १ माह
५. अन्य विवरण -

१ माह की सजा सन ४१ में काटने वाले श्रीयादव की समाज
सेवा अपना स्थान उच्च श्रेणी में रखे हुये है ।



[६६]

१. नाम-श्री जगीसिंह
२. पिता का नाम-श्री थानसिंह
३. स्थान / पता-सैदपुर
४. जेल-यात्रा-वर्ष-सन ४१ के व्यक्तिगत
सत्याग्रह में दो बार १, १ माह की सजा
५. अन्य विवरण —

क्षेत्रीय नेताओं के साथ आपने देश को आजाद कराने के लिये दो बार जेल यात्रा की । ग्राम की जनता आपके साहस को सराहती रहेगी ।

१. नाम-श्री भैयालाल परवार
२. पिता का नाम-मन्थूलाल परवार
३. स्थान पता-सैदपुर
४. जेल यात्रा वर्ष-४१ में १ माह की सजा
१००) रु० जुर्माना
५. अन्य विवरण—

साहूकार परिवार में जन्में श्री परवार ने स्वतंत्रता-संग्राम के महायज्ञ में जो आहुति की उसे भुलाया नहीं जा सकता । आपने ४१ में १ माह की सजा काटी तथा १०० रुपया का अर्थ दण्ड भोगा ।

[१००]

१. नाम—दमरूसिंह
२. पिता का नाम—मांगूमिह
३. स्थान पता— नैनवारा
४. जेल यात्रा वर्ष— १९४१ में व्यक्तिगत सत्या-
ग्रह में जेल यात्रा की और ६ माह
की सजा तथा ३०) रु० का अर्थदण्ड भोगा
५. अन्य विवरण

१९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रह के रूप में जेल यात्रा की और ६ माह की सजा तथा ३० रुपया का अर्थ दण्ड भोगा। गांधी विचार धारा के कर्मठ कार्यकर्ता, किसान नेता के रूप में इस सेनानी को सदैव स्मरणीय किया जाता रहेगा।

★

१. नाम—श्री गोकुलचन्द जैन
२. पिता का नाम—दमरू जैन
३. स्थान पता—लड़वारी, बार
४. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१ में १ माह की सजा
१००) जुर्माना
५. अन्य विवरण—

जैन परिवार में जन्मे और देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत इस सेनानी ने ४१ में १ माह की सजा एवं १०० जुर्माना का दण्ड स्वीकार कर देश आजाद कराने में सहयोग दिया।

[१०१]

१. नाम-श्री खंजोले काछी
२. गिता का नाम-श्री लम्पू काछी
३. स्थान / पता-ललितपुर
४. जेल यात्रा वर्ष-१९३० में जेल यात्रा
५. अन्य विवरण-

कछवाहा समाज को संगठित करके राष्ट्रीय आन्दोलनों में सहयोग देने की भावना को जगाया। समाज को जमींदारी के आतंक, पुलिस जुल्म से छुटकारा दिलवाने में आपके सहयोग पर समाज गर्व करता है।



१. नाम-श्री खलकसिंह
२. पिता का नाम-श्री पवंतसिंह
३. स्थान पता-सतवासा
४. जेल यात्रा वर्ष-१९४१ में ६ माह की कठोर सजा
५. अन्य विवरण—

क्षेत्र की जनता इस सेनानी पर गर्वित है जिसने आजादी के संग्राम में कूद कर गांव-गांव में अंग्रेज हुकूमत के प्रति नफरत की भावना को पैदा किया।



[१०२]

१. नाम— श्री गुलावराय तिवारी
२. स्थान:/ पता—ललितपुर
३. जेल-यात्रा-वर्ष—१९२१ में ६ माह
४. अन्य विवरण—

नगर के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में अग्रणी के रूप में सदैव आपको स्मरण किया जाता रहेगा ।



१. नाम-श्री परमानन्द
२. पिता का नाम-श्री भूरेलाल वैश्य
३. स्थान / पता-बार
४. जेल यात्रा वर्ष-१९४१ में १ माह की सजा
५०) रुपया जुर्माना
५. अन्य विवरण-

आपने क्षेत्रीय नेताओं के साथ सहकर आजादी के पुण्य कार्य में जो देश-प्रेम का परिचय दिया वह तो स्मरणीय है ।

[१०३]

१. नाम-श्री मथुराप्रसाद
२. पिता का नाम-श्री बाबूराम ब्राह्मण
३. स्थान पता-गेंदोरा
४. जेल-यात्रा-वर्ष-१९४१ में १ माह ५०)
- जुर्माना
५. अन्य विवरण—

आप कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता रहे । ४१ में आपको १ माह का कारावास तथा ५०) का अर्थ दण्ड हुआ ।



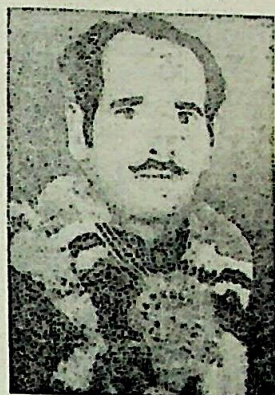
१. नाम-श्री शीतलप्रसाद
२. स्थान / पता-करोँदा
३. जेल-यात्रा-वर्ष -१९३२ में ६ माह
४. अन्य विवरण—

ग्रामीण नेता के रूप में आप सदैव संघर्ष का नेतृत्व करते रहे । अंग्रेजी साम्राज्य से लोहा लेने में आपने सन ३२ में ६ माह की सजा भोगी ।



[१०४]

१. नाम- स्व. श्री गणेशप्रसाद स्वर्णकार
२. पिता का नाम- श्री रामलाल
३. स्थान / पता- ललितपुर
४. जन्म तिथि- प्राप्त नहीं हुई
५. जेल यात्रा वर्ष- सन् ३०, ३२, में
३, ३ माह, सन् ४२ में १ वर्ष
६. अन्य विवरण—



आर्थिक स्थिति दयनीय होते हुए भी आपने जीविकोपाजन को प्रमुखता न देकर भारत माता को आजाद कराने में जो समूचे देश में संग्राम चल रहा था उसमें सक्रिय भाग लिया। आप कर्मठ कार्यकर्ता तो रहे ही हैं गांधी-वादी विचार धारा के अनुयायी, त्याग एवं तपस्या के धनी भी रहे हैं। अंग्रेजों को भगाने के लिए देश के नेताओं के आह्वान पर १९३० तथा ३२ में ३, ३ माह एवं ४२ में १ वर्ष तक जेल में रहे। भारत आजाद होने के बाद भी गोवा को आजाद कराने पुर्तगालियों को देश से बाहर निकालने के आन्दोलन में भाग लिया।





203

... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...

... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...
... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...

स मि ति



श्री गणेशाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

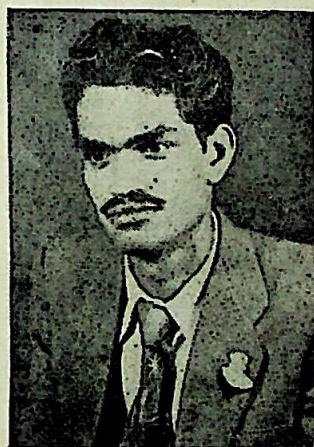
श्री गणेशाय नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



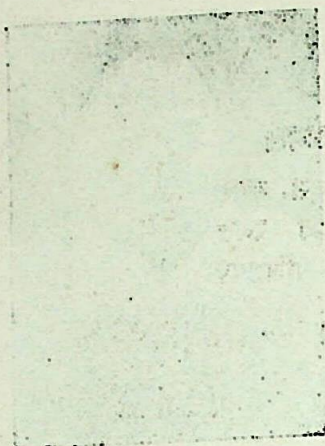
हरीहरनारायण चौवे
एडवोकेट
अध्यक्ष नगरपालिका एवं
रजत जयन्ती-समारोह समिति ललितपुर



श्री बलवन्तसिंह सीसौदया
सदस्य, नगरपालिका एवं
रजत जयन्ती-समारोह समिति
ललितपुर



श्री जगदीशनारायण चौवे
एडवोकेट
सदस्य, नगरपालिका एवं
रजत जयन्ती-समारोह समिति
ललितपुर

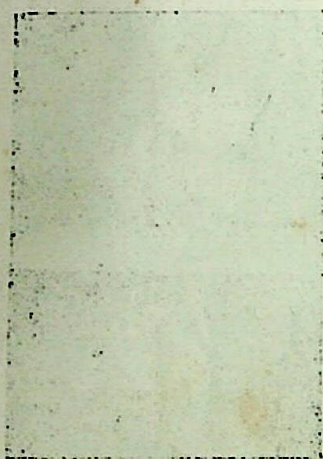


1000 1000 1000

1000 1000 1000

1000 1000 1000 1000 1000

1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000



1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000

1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000
1000 1000 1000 1000 1000

श्री मुहम्मद अजमल,

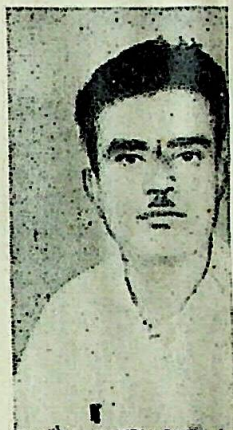
एम. एस. डब्ल्यू.

**सदस्य, नगर पालिका एवं रजत जयंती
समारोह-समिति, ललितपुर**



श्री हरप्रसाद कुशवाह

**सदस्य, नगर पालिका एवं रजत जयंती
समारोह-समिति, ललितपुर**



श्री कन्हेदीलाल सेन

**सदस्य, नगर पालिका एवं रजत जयंती
समारोह-समिति, ललितपुर**





Sk-Jain